भारत एवं राजस्थान सरकार द्वारा विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2023-2025

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 09 | अंक 17 | उदयपुर रविवार 15 सितम्बर 2024 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

सावन में ब्रज का कथा-गीत नवलदे

– मालती शर्मा –

नलवदे ब्रज का एक कथा-गीत है। इसे स्त्रियाँ सावन में गाती हैं। लोकगीत आर्थ-नागजाति के वैर विरोध और मेल-समन्वय का ऐसा पृष्ठ है जो लिखा नहीं गया, इतिहास में नहीं जुड़ा, लोकतात्विक अभिप्रायों से युक्त स्त्री हृदय के मार्मिक पक्ष और मधुर स्वरलहरी से भरा ।

नाग और सर्प हमारी लोकसंस्कृति में रूपक और रहस्य कथाओं से आवृत्त मानव जाति रही है। इनके विषय में महाभारत से लेकर पुराणों तक में कितने ही आख्यान और पुराकथाएं बिखरी हैं। कितने ही व्रत, पर्व, उत्सव हैं जिन पर नाग-सर्प उर्वरता, वर्षा, सन्तति और सम्पत्ति प्रदाता के रूप में पूजित हैं। कितने ही लोकदेवता नाग हैं या नागों से सम्बन्धित हैं। कितने ही लोकगीत-लोककथाएँ हैं जिनमें नाग अपनी दयालुता, परदुख कातरता, बल-पौरुष, न छेड़े जाने वाले शान्त स्वभाव और वैर शोधन के क्रोधी स्वभाव के साथ उपस्थित हैं । नाग लोक है, नाग मणियाँ हैं, नाग सुन्दरियाँ हैं। नाग ऐतिहासिक हैं और भारत के मूल निवासी आज भी पूर्वजों के रूप में नागों-सर्पों की कल्पना लोकमानस में जीवित है। निश्चित तिथि पर उनके लिये दूध रखा जाता है ।

महाभारत के आदि पर्व में उल्लेख है कि ये लोग गंगा के उत्तर में और यमुना के पश्चिमी किनारे पर रहते थे। 'बहूनि नाग वेश्मानि गंगायास्तीर उत्तरे।' अग्निपुराण में नागों की अस्सी जातियाँ वर्णित हैं। उनमें भी आर्यों के सदृष्य चार वर्ण थे पर समय भी कितना क्रूर मजाक करता है। समय के साथ इतिहास बदला, संस्कृति बदली और महाभारत काल में सभ्य सुसंस्कृत नाग जाति की कल्पना काले काटने वाले विषधरों की अवधारणा में बदल गई। इतनी गनीमत रही कि वे निरे साँप न होकर इच्छित रूप धारण आदि दिव्य शक्तियों से युक्त माने गये। विजितों को हीन ठहराना विजेताओं का चरित्र ही रहा है।

भारत के मूल निवासी नागों के साथ भी यही हुआ। आर्यों ने उन्हें उनके राज्यों से खदेड़ा, उनके बल-पौरूष का समुद्र मंथन जैसे सामूहिक बल के कार्यों में उपयोग किया, अनुपम लावण्यवती नाग सुंदरियों को अपनी अकशायिनी बनाया और अपनी राज्य विस्तार और अधिकार लिप्सा को खांडव दाह और नाग-यज्ञ जैसे रूपकों से ढक दिया। आर्य-नाग वैर कृष्ण के कालिया दमन और जनमेजय के नाग यज्ञ तक बहुत उग्र था। तक्षक, कालिया, वासुकि नागों के आठ कुलों में से थे।

यमुना के पश्चिमी किनारे पर, कुछ क्षेत्र और घने खांडव वन में नागों की बस्ती थी। नागराज तक्षक वहाँ का राजा था। अर्जुन के खांडव दाह से बस्ती उजड़ गई पर तक्षक बच निकला। पराजय के प्रतिशोध में तक्षक ने परीक्षित को एक बेर में छोटा कीड़ा बन घुसकर डसा, पर यह भी खूबसूरत बहाना है। यह परीक्षित की गुप्त रूप से हत्या का मामला रहा होगा। पिता का प्रतिशोध लेने के लिये जनमेजय ने नागयज्ञ या नरमेध किया? लेकिन दोनों घटनानों के पीछे की सच्चाई क्या इतनी ही है?

'नवलदे' गीत की कहानी इसी काल खण्ड की है। यह लम्बे आर्य नाग संघर्ष और उसके पीछे रहे एक और कारण पर प्रकाश डालती है। घटनाक्रम खाण्डव वन और कुरूक्षेत्र के आसपास का ही है। कहानी सिर्फ इतनी है- मणिधारी नागों से नागराज वासुकि का दरबार भरा था और कोई योजना बन रही थी। उधर अनिंद्य सुन्दरी नाग कुमारी नवलदे नहा धोकर लम्बे-लम्बे केश सुखाने अटारी पर चढ़ गई। उसके रूप का कोंधा वासुकि के दालान पर पड़ा। नागराज वासुकि किसी अदृश्य आकर्षण से खींचे इतने उन्मत्त हो उठे कि कचैरी बंद कर तुरन्त महल के लिये चल दिये। ऐसी कौन सुन्दरी मेरे महल में है? मैं अवश्य ही उसे अपनी अंकशायिनी बनाऊँगा लेकिन यह क्या? इतना सोचते ही नागराज के अंगों से तो कोढ़ चूने लगा। किसी तरह घर आये और निढ़ाल हो धरती पर गिर पड़े -

जुरी ऐ कचैरी वा वासिक भूप की जी
ऐजी सबु बैठेएँ मनि के नाग
रतन सिंघासन जैहरी राजा बैठिये जी

हाइरे धोइ नवलदे चढ़ि गई जी
ऐजी कोई सुखमति हम्बै कोई सुखमति
लम्बै लम्बै केस कौंधा रे मार्या वासिक बगल्यां जी

बन्द कचैरी वासिक राजा करि दयी जी
ऐजी सबु उठि गये मनि के नाग घर अपने कूं
वासिक राजा चलि दये जी
पाप विचार्यो वा वासिक भूप नै जी
ऐजी कोई फूल्यो न अंग समाय
कौन कामिनी सुन्दर मेरे महल में जी
ऐजी वाते करूं मैं भोग विलास कौन कामिनी....
पाप विचार्यो वा वासिक भूप नै जी
ऐजी जाके तन ते कोढ़ चुचाय
कोढ़िन काया है गई वासिक भूप की जी
हालत काँपत जैहरी राजा घर गये जी
ऐजी कोई गिरेऐं धरनि भैहराय
कोढ़िन काया है गई वासिक राज की जी।

पर यह कोढ़ आकस्मिक घटना नहीं थी। बेटी के प्रति बाप में पनप रहे अनुचित झुकाव के लिये बेटी का दिया गया दण्ड था। नहा धोकर अनुष्ठानपूर्वक छत पर से चलाये गये किसी जादू का परिणाम भी कहा जा सकता है। पश्चाताप करने पर नाग कुमारी ने सपथि (श्राप जान पढ़ता है) उठा ली और बाप की कोढ़ चिकित्सा के लिये अमृत लाने चल दी।

लगता है नाग कुमारी जादू विद्या में निपुण थी, अमृत लाने के लिये उसने पूरे वातावरण में सम्मोहन फैला दिया। शीतल मंद हवा बहने लगी। काले भूरे बादल झुक आये। रास्ते के राजा रंक नवलदे को देखकर पागल होने लगे और अमृत कुण्ड का रखवाला परीक्षित पंडवा भी निद्रामग्न हो गया। बाग में घुस नवलदे ने अमरत से कलसा भरा और कार्यपूर्ति की खुशी से भरी चल दी कि परीक्षित ने आकर रस्ता रोक लिया। नाम पता पूछा। वासुकि की पुत्री सुनकर कलश रखवा लिया और प्रणय प्रस्ताव रखा। यहाँ ऐसा प्रतीत होता है कि नवलदे के सौन्दर्य की चर्चा परीक्षित तक पहुँच चुकी थी और वह उसे पाने की कोशिश में भी था क्योंकि संवाद में यह बहुत दिनों से 'आसा लगने' और 'घर बैठे ही' मिल जाने की बात कहता है -

अमिरत कलसा नागिन न्याँधरौ जी
ऐजी मेरो सुनियो कान लगाय
अब घर चलिये आसा त्हारी लागि रही जी
ऐसौ घर बैठेई दईं मिलाय
बेटी रा वासिक भूप की जी

यह सुन कर नवलदे को तो जैसे आग लग गई। बचाव के लिये नागिन बन वह एक शिला के नीचे छिप गई। परीक्षित भी कहां कम था। वह सपेरा बना और मधुर बीन बजाकर नवलदे नागिन को बाहर निकलने को विवश कर दिया। नवलदे चिड़या बनी तो परीक्षित बाज बन पीछे उड़ा। वह मछली बनी तो परीक्षित बगुला बना और जल से निकाल लिया। दाँव पेच में परास्त हो नवलदे ने परीक्षित का प्रस्ताव स्वीकृत कर लिया पर पिता को इमिरत से स्नान करा आने के लिये सिर्फ तीन दिन की मुहलत मांगी। परीक्षित फिर भी आग्रह करता ही रहा, नहीं छोड़ा, तो नवलदे ने तीन दिन में लौट आकर हथिनापुर साथ चलने का 'निखाचा' भर अपना पीछा छुड़ाया।

और इससे आगे की कहानी है नागयज्ञ। पर इस गति से कई महत्व के प्रश्न उठते हैं। यह तो जाहिर है कि अब तक नागों के सर्प और मानव दोनों रूपों की धारणा मान्य हो चुकी थी पर सबसे बड़ा प्रश्न तो यह है कि अमृत से यहाँ क्या तात्पर्य है? यह कैसा अमृत था जो कलसा भर नहाने के कुछ बूँदें छिड़कने के लिये नहीं? यह अमृत कुंड कहाँ था? नवलदे को उसकी जानकारी कैसे थी? फिर वासुकि को हुये कुष्ठ के इलाज के लिये यदि उसकी जरूरत भी थी तो नागकुमारी को ही उसे क्यों लाने जाने दिया गया? क्या किसी और के द्वारा ले आने में संदेह था?

मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि अमृत से तात्पर्य यहाँ किसी प्राकृतिक औषधियुक्त ऐसे जल से है जिससे नहाना चर्म रोगों को ठीक करता हो। यह कुण्ड कुरुक्षेत्र स्थित वह तालाब ही है जो पुराणों में ब्रह्म-सरोवर के नाम से ख्यात है और आज भी चर्म रोग मिटाने के लिये प्रसिद्धि प्राप्त है। अवश्य ही यह सरोवर पहले खाण्डव वन में नागों के अधिकार में रहा होगा। खाण्डव दाह के बाद उस पर पांडवों का स्वत्व हो गया और नागों के लिये वह अमृत दुर्लभ हो गया। नागकुमारी को उसे लेने भेजने के पीछे आर्यों से मेल या संघर्ष ये दोनों ही उद्देश्य रहे होंगे। स्त्री झगड़े की जड़ भी है, और मेल की सुगंध भी।

दूसरी महत्वपूर्ण बात है पिता-पुत्री के यौन की जो वैदिक पौराणिक साहित्य में जहाँ तक मेरी जानकारी है, अज्ञात हैं। यह लोकवार्ता के अध्ययन की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण पक्ष है और अज्ञात भी। इतना जाहिर है कि इस सम्बन्ध के दण्ड स्वरूप सामाजिक मर्यादा की रक्षा के लिये वासुकि को कोढ़ हुआ बताया गया है। अत: नाग कुलों में यदि ऐसे सम्बन्ध कभी रहे भी होंगे तो महाभारत काल तक वह घोर पाप माना जाने लगा था। आर्य सम्पर्क का प्रभाव भी हो सकता है ।

ठीक-ठीक स्थिति बताना यहाँ सम्भव नहीं। जो भी हो नवलदे के प्रस्ताव स्वीकर के बाद भी वैर ही बढ़ा। महाभारत के आदि पर्व के अध्याय 57 में उल्लेख है कि जनमेजय के नाग यज्ञ में वासुकि, तक्षक, ऐरावत और घृतराष्ट्र कुल के सर्प ही जलाये गये। अन्त में वासुकि की बहन जरत्कारु के पुत्र आस्तीक ने यह हत्या काँड रुकवाया।

अनंत और शेष कुल के नागों से आर्यों का सदैव मेल रहा पर पौराणिक आख्यानों में नाग जाति को अपने में समा लेने के लिये बहुत कल्पनाएँ जुड़ीं। ये कश्यप के पुत्र माने गये। शेषनाग भूमिभारधारी हुये और भी आर्य देवताओं पर जहाँ-जहाँ अवकाश मिला, नाग चस्पा कर दिये गये। कृष्ण ने गीता में स्वयं को नाग-सर्पो का वशीभूत माना, लेकिन इतिहास के माथे पर लगा नागों के हत्याकांड का काला टीका नागयज्ञ की अग्नि से भी नहीं उजला सका। इन्द्र वृत्र संघर्ष से शुरू हुआ विरोध आर्य ऋषि जरत्कारु और नाग कुमारी जरत्कारू के विवाह और दोनों के रक्त मिश्रण से उत्पन्न संतान आस्तीक से ही शान्त हुआ। सच है, मानव जातियों में परस्पर के वैर शमन के लिये प्रकृति का यही अचूक और सहज तरीका है।

अब आप शब्द रंजन समाचार पत्र इस लिंक पर भी पढ़ सकते हैं- https://thetimesofu-daipur.com/shabd-ranjan/

अपना देश अपनी संस्कृति

प्रथम पूजनीय गणेशजी

देवों में देव गणेश प्रथम देवता के रूप में स्वीकार्य हैं। विवाह, शादी, जीमण, चूटण, निवास, वाहन खरीद या फिर अन्य मांगलिक कार्य तथा मुख्य अवसरों पर सर्वप्रथम गणेशजी की थरपना, स्मृति की जाती है और उसके बाद ही अन्य कार्य प्रारंभ किये जाते हैं। गणेशजी मुख्यत: ऋद्धि सिद्धि समृद्धि के देवता हैं। इनकी स्थापना से होने वाले कार्य निर्विघ्न समाप्त हो जाते हैं। इनकी स्थापना के बिना कार्य में विघ्न ही विघ्न पैदा होते हैं।

लोकजीवन में ऐसे कई कथा-किस्से प्रचलित हैं और वर्तमान में भी लोगों से आपबीती ; दोनों तरह की बातें सुनने को मिलती हैं। इस दृष्टि से प्रत्येक हिन्दू घर-परिवार में तथा गांव-शहर में गणेशजी के मंदिर और उनसे जुड़े कई चमत्कारी किस्से सुनने को मिलते हैं। ये किस्से इतिहास में नहीं मिलेंगे किन्तु लोकजीवन में प्रमाण रूप में मिलेंगे। इसीलिए कहा जाता है कि लिखित इतिहास से अधिक प्रामाणिक जानकारी लोक में सुनने को मिलेगी और कई बार जहां इतिहास मौन रहता है वहां लोकजीवन सर्वाधिक मुखर और जीवंत बना मिलता है।

इस दृष्टि से देखा जाय तो उदयपुर में गणेशजी के अनेक मंदिर हैं और उन मंदिरों में स्थापित गणेशजी की प्रतिमाओं के ही विविध रूप-स्वरूप नहीं मिलते हैं उनके संबंध में विविध किस्से और उनकी कार्य-सिद्धि के सबब मिलते हैं।

सर्वाधिक चर्चित और अर्थ दायक यहां के वोहरा गणेशजी हैं। वोहरा का अर्थ ही सेठ से है। सेठ वह जो आवश्यकतानुसार आर्थिक संबल दे। वोहरा गणेशजी की यही खासियत है। मांगलिक कार्य के लिए जिन्हें धन की आवश्यकता होती है वे लोग इन गणेशजी के स्थल पर पहुंचते हैं और इनसे अनुनय विनय कर आर्थिक मदद की मांग करते हैं। कहा जाता है कि एक दिन पूर्व जाकर गणेशजी को अपनी भावना व्यक्त कर दूसरे दिन व्यक्ति मनचाही रकम ले जाता है और फिर ब्याज सहित पुन: लौटाता है। ऐसे कई व्यक्तियों से आर्थिक सहायता पाने की आपबीती घटनाएं मैंने भी सुनी हैं।

इस मंदिर की स्थापना उदयपुर की स्थापना से भी पूर्व की बताई जाती है। पुजारी गणेशलाल के अनुसार यहां वर्ष भर ही भक्तों का दूर-सुदूर से आना-जाना होता रहता है। देशभर से विवाह पर कुंकुम पत्रिकाएं आती हैं जिनमें गणेशजी को निमंत्रण दिया होता है। गणेशजी सबकी सुनते हैं और कार्य निर्विघ्न संपन्न करते हैं।

उदयपुर की स्थापना के पश्चात मल्लातलाई स्थित दूधिया गणेशजी की स्थापना हुई। दूध से अभिषेक होने के कारण इनका दूधिया गणेशजी नाम पड़ा। पुजारी इन्द्रलाल सुखवाल ने बताया कि तब शहर में आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों से दूध विक्रेता दूधिये यहां आते थे। वे सर्वप्रथम इन गणेशजी का अपने दूध से अभिषेक करते थे इसलिए इन्हें दूधिया गणेशजी कहा जाने लगा। वर्तमान में भी यही स्थिति है। दूध विक्रता बताते हैं कि दुग्धाभिषेक के बाद गणेशजी उनके व्यवसाय में दिनदूना रात चौगुना वधापा करते हैं।

दूधिया गणेशजी की स्थापना के आसपास ही महासतियांजी के पास भाणा गणेशजी की स्थापना की गई। भाणा से तात्पर्य बर्तन से है। पुजारी खेमशंकर शर्मा बताते हैं कि जरूरतमंद मंदिर आकर गणेशजी से अर्जी लगाते हैं और खाली बर्तन रख चले जाते हैं। गणेशजी की कृपा से उनकी जरूरत पूरी हो जाती है और कार्य निर्विघ्न सम्पन्न हो जाता है। भक्त पूरी निष्ठा से ब्याज सहित रकम चुकाते हैं।

दूधतलाई के पास पाला गणेशजी का मंदिर भी अन्यों की तरह चमत्कारी माना गया है। इस मन्दिर के बनने के पीछे एक कहानी है जो लाखा बंजारे से जुड़ी हुई है। एक समय लाखा बंजारा इस जगह से गुज़र रहा था तो उसने कुछ देर विश्राम लेने की सोची। वहाँ उसने आसपास पड़े जानवरों के गोबर से गणेशजी की मूर्ति बना डाली। रात को जब ये लोग सो रहे थे तब सीसारमा नदी में तेज़ पानी आया और आसपास बंधे जानवर और गणेशजी की मूर्ति को बहा ले गया। इस बात से लाखा बंजारा बहुत दुखी हुआ और उसने महाराणा से गणेश मंदिर बनवाने की अरज़ की।

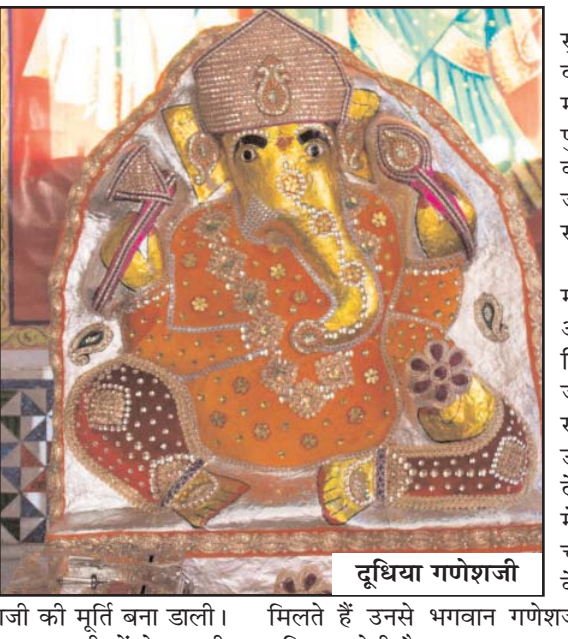

दूधिया गणेशजी

इस पर महाराणा ने जब पीछोला की पाल बननी प्रारंभ हुई तब यहां गणेशजी की स्थापना की ताकि पर्याप्त पानी भरा रह सके और यहां के निवासियों की पूर्णरूपेण सुरक्षा हो सके। पाल के पास स्थापित होने से ये गणेशजी पाल गणेशजी कहलाये और कालान्तर में पाल से पाला नाम चल पड़ा। इस प्रतिमा की स्थापना गाय के गोबर तथा मिट्टी के गणेश बनाकर विधिविधान से की गई। महाराणा की ओर से तब जो स्वर्ण-श्रृंगार धारण कराया गया था वही श्रृंगार आज भी गणेश चतुर्थी को धारण कराया जाता है।

हाथीपोल स्थित मावा गणेशजी की प्रतिमा मावा विक्रेताओं द्वारा की गई और विक्रय से पूर्व इन गणेशजी को मावा चढ़ाया जाता है। कभी इस क्षेत्र में मावा की बड़ी मंडी थी। वर्तमान में भी उसी परंपरानुसार विक्रय के लिए आया ताजा मावा चढ़ाया जाता है। यह प्रतिमा लगभग 225 वर्ष प्राचीन कही जाती है।

चांदपोल के बाहर महाराणा जवानसिंह के समय जिन गणेशजी की स्थापना की गई वह 6 फीट ऊंची एक दंतीय प्रतिमा है और आकार में जाड़ी होने से गणेशजी का नाम भी जाड़ा गणेशजी प्रचलित हो गया। पुजारी डॉ. देवेन्द्रपुरी गोस्वामी ने बताया कि ऐसी बड़ी प्रतिमा शहर में अन्यत्र नहीं है।

आहाड़, आयड़ के सुथारवाड़े में गणेशजी की मूषक वाहिनी प्राचीन प्रतिमा है। पुजारी मनोहरलाल के अनुसार यह पुश्तैनी प्रतिमा है जो उनके पूर्वजों को खुदाई के दौरान प्राप्त हुई थी। जहां यह प्रतिमा प्राप्त हुई वहीं उसे स्थापित कर मंदिर बनवा दिया।

गणेश चतुर्थी को सभी मंदिरों में गणेशजी की विशेष आंगी की जाती है। लड्डुओं तथा विविध मिष्ठान्नों का भोग लगाया जाता है। महाआरती की जाती है। रात्रि जागरण तथा भजन भाव के उल्लास में जन-जन का उमड़ाव देखते ही बनता है। सभी मंदिरों में बिराजित गणेशजी के विविध चमत्कारों तथा अलौकिकताओं के जो अजीब किस्से सुनने को मिलते हैं उनसे भगवान गणेशजी की महिमा स्वत: सिद्ध हुई दृष्टिगत होती है।

- म. भा.

टोटकों से वर्षा का आह्वान

जीवन जीने की कई आवश्यकताओं में हवा-पानी सबसे अनिवार्य समझे गये हैं। पानी पर सर्वाधिक जानकारियां मिलती हैं। कथा, किस्सों, मिथकों में भी पानी की दास्तान अनगिनत हैं। पानी संबंधी कहावतें और पानी के विविध नाम-प्रकार भी आश्चर्य देने वाले हैं। सबसे अधिक मशक्कत भी पानी के लिए और हाहाकार भी पानी के लिए करनी पड़ती है। साहित्य और लोककंठों पर पानी के अनेकानेक संदर्भ हैं।

ऐसे पानी का जीवनदानी प्रताप जब गड्डमड्ड हुआ नजर आता है तब जनजीवन में हायतौबा मच जाता है। जीना दूभर हो जाता है। पानी से भी अधिक कीमती वस्तुएं तब व्यर्थ लगती हैं। राजस्थान प्रदेश का बहुत कुछ हिस्सा रेतीला है। वहां मीलों तक रेत ही रेत दिखाई देती है। पानी ढूंढे भी बड़ी मुश्किल से मिलता है।

रेगिस्तान रेतीस्थान ही होता है। वहां कुए भी बहुत गहरे होते हैं। पानी ठेठ पाताल में दिखाई देता है। शेष हिस्सों में भी अनियमित बरसात होती है। मेवाड़ का क्षेत्र तो सरसब्ज रहा ही नहीं। यहां अकाल बहुत पड़े। गीतों, कथाओं, बातों में अकाल के वर्णन दिल दहला देने वाले हैं।

इसीलिए यहां वर्षा का महत्व है। वर्षा नहीं होने पर जनजीवन बड़ा अस्तव्यस्त, दुखदायी और घोर निराशा में डूबा देवी-देवताओं, अदृश्य शक्तियों की मनौती की शरण लेता है। भांति-भांति के टोटके करता है। कभी इन्द्र की वंदना अभ्यर्थना करता है तो कभी उसे बुरी तरह कोसता प्रतीत होता है। इन्द्र कुपित होता है तो जनता भी कम कुपित नहीं होती। वह भी अपने रंग-ढंग से इन्द्र और इन्द्राणी तक को सजा देने में कोई कसर नहीं रखती।

वर्षा नहीं आने पर गांव-गांव, घर-घर बड़ी बेचैनी फैल जाती है। नाना प्रकार की मनौतियां बोली जाती हैं। नाना प्रकार के टोनेटोटके किये जाते हैं। समूहबद्ध अनुष्ठान किये जाते हैं। इनमें सर्वोपरि गांव के बाहर जातिगत गोठ, समूहभोज मुख्य है। यह जातिगत और सर्वजनकारी भी होता है।

ऐसा भोज उजेणी कहलाता है। प्रसिद्धि है कि जब घोर अकाल पड़ा तब राजा विक्रमादित्य ने ऐसा आयोजन किया था। आयोजन समाप्ति के बाद जब संध्या को लोग अपने-अपने घर लौट रहे थे तब जोर की बरसात हुई जिससे उजेणी का सकारात्मक सार्थक प्रभाव प्रत्येक जन को आह्लादित कर गया। धीरे-धीरे सबके कंठों पर उजेणी ऐसा चढ़ा कि महाकाल की स्थापना हुई और तांबावती नाम से जाने जाने वाली नगरी उजेणी नाम से चर्चित होती कालान्तर में उज्जैन कहलाई।

पीपल में देवी-देवता का वास कहा गया है। अत: मोहल्ले पड़ौस की औरतें मिल पीपल की पूजा करती हैं। वहां से लौटते समय पानी भरा छलकता कलश लेकर चलती हैं और रास्ते में जो भी मिलता है उसे पानी छींटती हैं। इससे लोगों में हड़कंप मच जाता है। कहते हैं, इस क्रिया से इन्द्र प्रसन्न हो बरस पड़ता है। कुछ महिलाएं अपने-अपने घरों से मिट्टी के बर्तन में कचराकूड़ा भर पास के चौराहे पर पटक आने का टोटका करती हैं।

कुछ बालिकाएं मिलकर कवेलू पर गोबर की मेंढ़की बना घर-घर घूमती- 'मेंढ़की ने पाणी पावो, धोबो-धोबो धान भरावो' पंक्ति का उच्चारण करती हैं तब गृहस्वामिनी उस मेंढ़की पर पानी की धार देकर बालिकाओं को मुट्ठी-मुट्ठी, धोबा-धोबा धान की दक्षिणा देकर विदा करती हैं। कुछ मनचले गधा-गधी का विवाह रचाकर मसखरी करते पूरे गांव में फेरी लगाते हैं।

गांव की औरतें मिल एक मटकी में कुंकुम लच्छा चावल तथा लाल कपड़ा रख बड़े हरख के साथ गांव बाहर गीत गाती जाती हैं और घने वृक्ष के नीचे वह मटकी फौड़ लौट पड़ती हैं। कई गांवों में जहां मामादेव, गोगादेव, खेड़ादेव, गूगर्‌यादेव, कल्लादेव थरपित किये होते हैं वहां उनके देवरे, मंदरी, चौकी या फिर स्थानक पर जाकर माटी के बने घोड़े चढ़ाते हैं। मान्यता है कि इन्द्रदेव प्रसन्न हो, द्रुतगति से घोड़े पर सवारी करते आयेंगे और पानी की वर्षा कर धरती को खुशहाली देंगे।

मटकी में मिर्च मिली राख की पींडी रख चौराहे पर धमाका करने का टोटका भी प्रचलन में है। कहीं घर के बाहर दीवाल पर उल्टे मुंह इन्द्र का गोबरांकन किया जाता है तो कहीं कुंकुम अथवा कोयले के इन्द्र-इन्द्राणी औंधे मुंह मांडे जाते हैं ताकि वे चिढ़ कर ही सही, बरसें तो सही। आटे के इन्द्र-इन्द्राणी बनाकर उनके समक्ष मिष्ठान्न की धूप-बत्ती कर भी बरसात की कामना की जाती है।

रात्रि को जब सब सो जाते हैं तब मोहल्ले की औरतें योजनाबद्ध रूप में निर्वस्त्र हो नाचती-कूदती अपने-अपने घर से निकल पड़ती हैं और पास के दवस्थान को स्पर्श कर लौट पड़ती हैं। इससे वर्षा देव मारे लज्जा के बरसात देकर सबके कोप भाजन से मुक्त हुआ समझा जाता है। अपने गांव में जिस प्रोल में मैं रहता था, उसके आसपास की बस्ती में मेरी उम्र के आठ-दस बच्चे और थे। कुछ बच्चों की माओं ने मिल हमें निर्वस्त्र कर दिया। छोटी उम्र होने के कारण हमें कोई लज्जा नहीं हुई अपितु अति प्रसन्न होकर समूह रूप में नंगधड़ंग अवस्था में निम्नांकित गाते निकल पड़े-

मेह बाबा आजा/ घी रोटी खाजा
आयो बाबो परदेसी/खाली कोठा भरदेसी
ढांकणी में ढोकलो / मेह बाबो मोकलो।

अर्थात् मेह बाबा अथवा वर्षा देव इन्द्र! तू आ और हमारे साथ घी-रोटी खा। इस बाल-मनुहार पर रीझ कर सचमुच परदेशी पाहुन मेहबाबा आयेगा और धान संरक्षित करने के माटी के बने कोठे भर देगा। ढक्कन में ढोकला नामक खाद्य विशेष रख मेहबाबे को निमंत्रण देते ही मेहबाबा हाजिर हो जोर की वर्षा करता है।

इतने अनुष्ठानमूलक टोटकों से अंतत: इन्द्रदेव अकाल मेटते, समेटते हैं और बरसात कर जन-जन को नया जीवन प्रदान करते हैं। म.भा.

राजस्थान अनावृष्टि का तो घर है ही पर कभी-कभी अतिवृष्टि के लिए भी ताबड़तोड़ जीवन देकर मुश्किलें पैदा कर देता है। ऐसी स्थिति में बरसात रुकने का नाम नहीं लेती। अपने बचपन में मैंने अपने गांव में अतिवृष्टि का कमाल देखा है। तालाब का ओटा चलने लग गया और देखते-देखते पूरे गांव को पानी ने अपनी चपेट में ले लिया तब एक आदिवासी को ढोल के साथ आगे कर भैरु को मनाया गया। गीत था-

भैरु थांनै पूजां ओ भैरु थांनै पूजां
भैरु ढोला रो ढमको वाजै थांनै पूजां
भैरु धरती धूजाड़ो मती थांनै पूजां
भैरु दुखिया री साय कीजौ थांनै पूजां
भैरु मनखां री मार घणी थांनै पूजां
भैरु बजुबां बेमौत मरे थांनै पूजां
भैरु बीजरी री वार मेटो थांनै पूजां

अर्थात् ढोल के ढमाके के साथ भैरु तुम्हारी पूजा करते हैं। धरती कंपायमान रोको। दुखिया की सुध लो। मनुष्य मारे जा रहे हैं। अबोले जीव बेमौत काल कवलित हो रहे हैं। जोरशोर से बीजली कड़क रही है। सारे दुख दूर करो। तुम्हारी पूजा करते हैं।

- म. भा.

स्मृतियों के शिखर (190) : डॉ. महेन्द्र भानावत

नट और उनकी कलाबाजियां

हमारे यहां कई कबीले ऐसे मिलेंगे जो घुमक्कड़ हैं, चलते-फिरते हैं। चलना-फिरना ही इनका जीवन है। यह चलना-फिरना उस चकडोलर की तरह है जो गति प्रदान करती है। इस गति में एक ताजगी, स्फूर्ति, उल्लास और प्रवहमान संस्कृति है। इस संस्कृति में इन कबीलों का अपना पारम्परिक कलात्मक इतिहास बना हुआ है जिससे हमारी ग्राम्य लोक चेतना के कई रंग उदघाटित हुए मिलते हैं। इन कबीलों में नटों का अपना निराला कला-समाज और उजला इतिहास है।

नट हमारे देश के प्राय: सभी प्रान्तों में फैले हुए हैं। इनकी अपनी-अपनी जाति, नाम तथा कलाबाजियाँ और करिश्मे हैं। कहीं ये नट गाने-बाजने का, कहीं नाचने का, कहीं बाजीगरी का, वहीं विविध स्वांग-खेल तो कहीं नाना प्रकार की शारीरिक कसरत-क्रियायें दिखाने का धन्धा करते हैं। गधे, घोड़े, पाड़े और ऊंटों के सहारे ये लोग अपना सम्पूर्ण सामान लादे एक स्थान से दूसरे स्थान घूमते-फिरते हैं और अपने खेल दिखा-दिखाकर अपने परिवार का पोषण करते हैं। इन नटों के साथ इनका पूरा परिवार चलता है। एक परिवार 'डेरा' कहलाता है तथा एक से अधिक परिवार के साथ रहने की स्थिति में उसे 'टोला' कह कर पुकारा जाता है।

राजस्थान के नट मुख्यत: रस्सी तथा बांस पर नाना प्रकार के अदभुत एवं आश्चर्यकारी खेल दिखाने के लिए पूरे देश में जाने जाते हैं। इनमें जितने प्रवीण पुरुष होते हैं उनसे भी अधिक प्रवीण इनकी औरतें होती हैं। रस्सी पर जादुई करतब दिखाने के फलस्वरूप कई बार तो राज्य की ओर से इन्हें आधा राज्य देने तक के उदाहरण यहाँ सुनने को मिलते हैं। इससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि इनके खेल कितने चमत्कारिक, असाधारण तथा अकल्पनीय उमंगों से भरे-पूरे होते हैं। इतिहास आज भी इन घटनाओं की प्रत्यक्ष ताजगी से संस्पूरित साक्षरित है।

उदयपुर की गलकी को आधा राज्य :

उदयपुर की सुप्रसिद्ध पिछोला झील में बना 'नटनी का चबूतरा' देखते ही इतिहास आंखों पर चढ़ आता है।

नटनी गलकी का नाम दूर-दूर तक फैला हुआ था। सरदारों ने महाराणा के सम्मुख प्रस्ताव रखा कि हुजूर गलकी अपने नाच की

नटनी का चबूतरा

साम्राज्ञी है। वरत पर ऐसा नाचती है कि जमीन पर भी वैसा नाच कभी नहीं देखा गया। महाराणा ने कहा कि नटनी क्या नाच बतायेगी ? यह सुन गलकी से नहीं रहा गया उसने कहलवाया-'' रंडियों वाला नाच तो हुजूर ने बहुत देखा है, महलों में बन्द होकर। यहां तो खुला नाच होगा। पानी पर वरत बंधेगी और तलवार के संग उस पर नाचा जायेगा।' महाराणा को विश्वास नहीं हुआ। कहने लगे कि ऐसा हरगिज नहीं हो सकता। सरदारों ने कहा कि हो जाय तो। महाराणा बोले- हो जाय तो आधा राज।

महाराणा के हुकुम की देरी थी। महल से लेकर पूरी पिछोला झील पर वरत बांधी गई। सारे सरदार, उमराव गलकी का नाच देखने इकटठे हुए। नट ने ढोल बजाना प्रारम्भ किया और बिजली सी गलकी अपने हाथ में तलवार थामे वरत पर चढ़ गई। नागिन की भांति नाचती सरसराती अपने हावभावों में गलकी रस्सी पर बढ़ती जा रही थी कि सरदारों के होश खटटे हुए जा रहे थे।

सोच रहे थे कि यदि नटनी सफल हो गई तो आधा राज्य जायेगा और राज करेगी सो अलग। इशारे चले। छलबल से रस्सी कटवा दी गई। देखते-देखते नटनी जल से थबोले खाते पिछोले में जा गिरी। नटनी की जल समाधि और उसकी स्मृति में बना चबूतरा 'नटनी के चबूतरे' के नाम से आज भी उस घटना का जीवंत इतिहास खड़ा किये हुए है। मरते-मरते गलकी ने श्राप दिया- 'मैं तो मर रही हूँ, राणाजी की क्या कहूं, वे तो हमारे दातार हैं पर आगे कोई नट यहाँ नहीं आयेगा।' कहते हैं तब से कोई भी राजनट उदयपुर की सीमा- चिरवा का घाटा, केवड़ा की नाल, अलसीगढ़ तथा देवारी दरवाजे के भीतर नहीं आता है।

जालोर दुर्ग और सिणगारी को पूरा राज्य :

यह तो आधे राज की बात हुई। पूरे राज की बात जालोर दुर्ग का प्रत्येक कण-कण कह रहा है। यह बात उन दिनों की है जब यहां का दुर्ग अकूत लागत से निर्माणाधीन था। तभी दल्लू नट अपनी बेटी सिणगारी को लेकर वहां पहुँच गया। राजा राव कान्हड़दे के सम्मुख सिणगारी के रूप-सौन्दर्य की और कला-करिश्मे की चर्चा चली तो राजा राव के मुख से निकल पड़ा कि सामने महल से यदि दूर ऊँची पहाड़ी तक रस्सा बाँध कर सिणगारी नाचती हुई एक सिरे से दूसरे सिरे तक पहुँच जाय तो आधा क्या पूरा जालोर का राज दे दूं।

यहां किस बात की देर थी। देर थी तो हुकुम की। ज्योंही हुकुम हुआ कि फटाफट रस्सी बांध दी गई जमीन से हजारों हाथ ऊँची। सिणगारी चढ़ाव-उतार की आठ मिट्टी की गगरियां अपने माथे पर लिये पणिहारी नृत्य में बढ़ने लगी। वह आखिरी सिरे पर पहुँचने ही वाली थी कि सहसा रस्सा काट दिया गया।

सिणगारी नीचे गिरते ही टूक-टूक हो गई। राजकुमार जालोर से यह सब नहीं देखा गया। कहते हैं उसने तो पत्थर पर अपना सिर पटक-पटक कर अपनी जान दे दी। दल्लू ने श्राप दिया- 'जिस फरेब से मेरी बिटिया की जान गई उसी तरह यह दुर्ग भी हाथ से चला जावेगा। यही हुआ। कुछ दिन बाद दिल्ली के बादशाह ने दुर्ग अपने अधीन कर लिया। अलवर से 30 मील दूर 'नटनी का बारा' नामक स्थान भी एक इसी प्रकार की घटना को सरजीवित किये है जहाँ बना नटनी स्मारक आज भी पूजनीक बना हुआ है।

खम्भा और नट खेल :

ये नट राजस्थान के मारवाड़ में अधिक फैले हुए हैं। बरसात को छोड़ प्राय: पूरे ही वर्ष भर ये घूमते रहते हैं। अपने छोटे-छोटे बच्चे को भी ये प्रारम्भ से ही अपने खेल करिश्मों का प्रशिक्षण देना प्रारम्भ कर देते हैं। ढोलक इनका मुख्य वाद्य है। प्रारम्भ में जहां कहीं इन्हें खेल देना होता है ये लम्बा खम्भा गाड़ देते हैं और फिर जोर-जोर से ढोलक बजाना प्रारम्भ कर देते हैं ताकि उसकी आवाज से लोग इकट्ठे हो जायें। जगली जानवरों की शिकार तथा मांस, शराब के ये बड़े शौकीन होते हैं।

इन नटों का अपना अच्छा जाति संगठन होता है। बाल-विवाह, विधवा-विवाह का इनमें प्रचलन है । जंगल में ही इनके डेरे-टोले मिल जाते हैं और आपस में ब्याह रचा लेते हैं। इन नटों में हिन्दू व मुसलमान दोनों हैं। हिन्दू नट हिन्दू रीति रिवाज तथा संस्कार लिए होते हैं जबकि मुसलमान नट मुसलमानों के रहन-सहन तथा संस्कृति की छाप लिये होते हैं।

तेल जितना खेल :

बाँस तथा रस्सी पर नाना प्रकार के शारीरिक भावांकन दिखाने के कारण इनका शरीर अत्यन्त लचीला और नरम होता है। अपने अंगों को ऐसा बनाये रखने के लिए तेल का प्रयोग इनमें खूब चलता है। इस प्रयोग के फलस्वरूप 'तेल जितना खेल' नामक एक कहावत भी इनके लिए सुनने को मिलती है। हनुमानजी इनके प्रिय देव हैं। जब तक नट-नटनी अपने खेल में पूर्ण पारंगत नहीं हो जाते, ये खेल नहीं दिखाते हैं। कारण कि खेल में यदि जरा-सा भी ध्यान इधर-उधर हुआ कि प्राणों से हाथ धोने का खतरा रहता है।

एक भजन में इसीलिये यह पंक्ति कही गई है जो इस कला का सही चित्र खींचती है। पंक्ति है - 'नटणी रो खेल रामा मंडियो मैदान में; खेल करूं तो म्हारो प्राण तलूं।' सही भी है, नट नटणी का कोई भी कार्य सरल नहीं है। जोखिम भरा है। प्राण तक हर समय हथेली पर रखे रहते हैं। वरत पर चढ़ने वाली नटणी जब तक अपनी सूरत को वरत के साथ बांध नहीं देती वह अपने हुनर में जम नहीं सकती। एक गीत में यही बात कितनी खूबसूरती से तराशी गई है -

नटणी चाली वरत पर नटणो ढोल बजावे,
ऊची चढ़ी नैं मंगला गावे सूरत वरत में मिलावे रे।
ल्हेरी दिल अपना नैं समझावे॥
नटणी तो चाली जल भरबा नैं जल तो जमना रो लावे,
एक बात करता नैं वारी चडतां सूरत घाघर में मिलावे र।
ल्हेरी दिल अपना नैं समझावे।।

नटकला की अन्तर्राष्ट्रीयता :

नटों की यह कला विदेशों में भी ख्यात-प्रख्यात हुई। यहाँ के नट बाहर भी घूमते-घामते पहुंच गये। बड़ी ताज्जुब की बात तो यह रही कि यहाँ से नटबाजी सीखकर कुछ लोग विदेश चले गये और वहाँ से इस कला के प्रदर्शन देने राजस्थान आये। जयपुर के महाराजा रामसिंह के समय में एलबर्ट और वर्न्युअल नामक दो नट आये जिन्होंने अपना खेल दिखाकर इनाम, दुशाला प्राप्त किया। यह घटना 29 सितम्बर, 1856 की है।

'रौजतुल तालीम' नामक पत्र में लिखा है कि नटों ने जमीन में दो खम्भे गाड़कर ऊपर एक मोटी रस्सी से उन्हें जोड़ दिया था। इस रस्सी के बीचों बीच एक लोहे का झूला-सा पड़ा था जिससे पाँवों के बल एक नट उल्टा लटक गया था। यों लटककर उसने अपना एक हाथ कमर पर रखा और दूसरे हाथ से पाँच मन छह सेर की एक तोप को जिसकी दो कड़ियों में एक जंजीर बन्धी थी, जमीन से दस फुट ऊपर उठा लिया। इतने वजन को अपनी उल्टी लटकन की हालत में उठा लेने के बाद उसने दूसरे नट को इस बारूद भरी तोप को आग दिखाने के लिये कहा। आग दिखाते ही तोप ने जबर्दस्त धड़ाका किया लेकिन एलबर्ट नामक इस नट के हाथ को कुछ भी तो नहीं हुआ।

कलात्मक कबीला :

वस्तुत: इनकी कला से किसी का सानी नहीं। इनका अपना कलात्मक कबीला और काबिले तारिफ करतब हैं। ये चलते हैं तो

रस्सी पर करतब दिखाता नट कलाकार

जैसे इनके साथ इनका इतिहास चलता है। ये वरत बांधते हैं तो जैसे इनकी परम्परागत संस्कृति के समग्र रंग अपना ओर-छोर लिए इनकी बंधी मुट्ठी में बंध जाते हैं और जब ये नाचते, बजाते अपने करिश्मे दिखाते हैं तो आसपास का समग्र वातावरण नचता, बजता, झंकृत होता हुआ उठ खड़ा होता है। नटों की छाप और थाप जहाँ भी पड़ती है, अपने नट रूप को कई नये आयामों, अर्थों को उजला सा दिये प्रतीत होती है।

नट-भाट और उनकी उत्पत्ति :

कुछ लोग नट के रूप में भाट बन गये। उन्होंने अपना धन्धा बदल लिया और अपने आप को भाट कहलाने में गौरव महसूस करने लगे। कठपुतली नचाने वाले नट इनमें मुख्य हैं। इस जाति में आधे लोग तो पुतली खेल दिखा कर अपना जीवन यापन करते हैं और आधे खेल नहीं कर भाटबाजी करते हैं। मारवाड़ में इन लोगों के अधिक घर हैं। सन् 1977 में किये गये सर्वेक्षण के अनुसार शेखावाटी के कटलाघर, फतहपुर, सलमपुरा (जयपुर), नवलगढ़, कुकणबाली, रसाल, डीडवाना में इनके इक्के-दुक्के घर थे।

कठपुतली खेल करने वाले नट दांता, बांसा, खोंरंडी (कुचामण), मढ़ा, मानीपुरा, जीजोट, श्यामपुरा, विदियाद, प्यांवा, परंचवां, नीमोद, थावली, जयपुर, नौसल (किशनगढ़), सीकर, बलदू (डीडवाना) में रहते थे। इनमें से दो-एक परिवार वाले दिल्ली तथा लखनऊ में पुतली बताने का धंधा कर रहे थे।

अपनी उत्पत्ति के बारे में इनका कहना है कि भगवान ने जब पृथ्वी की रचना की तब इनके पूर्वजों को नृत्य गीत व खेल तमाशों का काम दिया। पद्यबद्ध यह किवदन्ती कथा आज भी इनके मुख से सुनने को मिलती है। भूरा भाट (जीजोट) से यह कथा इस रूप में तब सुनने को मिली थी-

आप उपाई नार। नार उपाया तीन जणां। बरमा विष्णु महेस। भगवान बोल्या- 'पांड्या पतड़ो न्हाक दे, काजी न्हक कुराण। जद की कथा बताय दे कद थरपी जमी आसमान ?' भाट बोल्यो- 'बैठ तणा धरती रची, उठ तणां आकास। आप निराकारी वींके न्हीं मांय न बाप॥ एक तो ऊंकार भयो। दोय तो द्वापर भया। तीन तो तिरलोकी भया।

चार तो रूद्र भया। पांच तो पांडव भया। छै तो दरसण भया। सात तो सायर (सागर) होया। आठ कुली परबत होया। नौ कुली नाग होया। दस औतार सरी भगवान लिया। ग्यारा तो इन्दर होया। बारा तो पंथ होया। तेरा तो रतन होया। चवदा तो विद्या होई। पंदरमी मात सुरसती होई। सौला तो सावन्त (दानव) होया। सतरमी माता सीता बणी। अठारमा मनसापति होया। गुन्यू सूं पारबती होई। बीस बसवा धरती होई। अक्कीस बसवा आकास ने तो सरूपी जी के मांय न बाप।'

भाट भगवान रे मुख सूं परगट होय आपणो करतब पूछ्यो जीरो पद इण तरे रो है-

'परबू होयो परबू की वेलां राम धणी रोजी बांटे। सातूं पूर्ण एकै साथै मन्ने रटे, मणियां जीमतां ने मंगणियार रटे।' भाट केवै- 'दाता तूं मन्नै भाट ना बणाव क्यूं कै म्हैं करूं पाराई आस। एक दातार मिलै तो राजी नीतर

रेवूंला उदास।।' भगवान कयो- 'बच में अन्न बीं बच में चंद थारो जोर सवायो। राजा होई ने जा रे भाट का बेटा थारे परा लबद सो पायो।' जद भाट सरू परथम भगवान रे घर मांगवाने गयो अर बोल्यो-'धन धनं रे जसोदा। माता कनैयो जी पैदा होयो। आज को दन रूढो साय आज आणन्द भयो। मोत्यां का आखा ले'र ऊभी माता जसोदा। कीयां का ढोल बणाऊं ? कीयां का नगारा बणाऊं ? गाल का ढोल बणाऊं, जीभां का डंका बणाऊं। केस्यां सही, वीं गड के गोर में बाज्या ढोल बरी कार तद सूं भाट लोगों राजावां में मांगवा लागिया।

शब्द रंजन

उदयपुर, रविवार 15 सितम्बर 2024

सम्पादकीय

भारतीय भाषाओं में हिंदी सर्वाधिक सक्षम

18-19 फरवरी, 2016 को मद्रास विश्वविद्यालय में दर्शन विभाग और जैनविद्या विभाग के तत्वावधान में राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन हुआ। विषय था- भारतीय परंपराओं में मृत्यु चिंतन तथा संलेखना, संथारा व समाधिमरण। दोनों ही दिन सभी सत्रों में पत्रवाचकों और वक्ताओं ने अपनी बात अंग्रेजी में ही रखी।

अंग्रेजी में भारतीय और जैन दर्शन के अनेक पारिभाषिक शब्दों के उपयुक्त अर्थपूर्ण शब्द नहीं मिलते हैं। इससे वक्ता का संदेश सही रूप में संप्रेषित नहीं हो पाता है। इसके विपरीत हिंदी में कही बात तुरंत व गहराई से समझी और समझाई जा सकती है। उक्त सभा में नब्बे प्रतिशत से अधिक श्रोता हिंदी जानते-समझते थे। अत: मैंने हिंदी में बोलने की अनुमति प्राप्त कर ली थी।

मुझे समापन सत्र में मुख्य वक्तव्य देना था। मेरे द्वारा हिंदी में व्याख्यान शुरू करते ही सभा में हो रही फुसफुसाहट बंद हो गई। मैंने शास्त्रीय संदर्भ, गाथा, छंद व काव्यपद के साथ हिंदी में अपनी बात रखी। संलेखना, संथारा और समाधिमरण, इन तीन शब्दों के बारे में श्रोताओं में जिज्ञासा थी। मैंने अंतिम आराधना की प्रक्रिया के साथ तीनों शब्दों के अर्थ व भावार्थ बताए। मैंने कहा कि संथारे की पूर्व भूमिका संलेखना है एवं संथारे का परिणाम है- समाधिमरण।

काव्यात्मक शैली में व्याख्यान सुनकर सबको बड़ा आनंद आ गया। पूरा सभागार तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा। व्याख्यान के बाद सभा में से कुछ प्रबुद्ध श्रोता आए और बोले, दो दिन से बोर हो रहे थे। आज जाते-जाते कुछ समझने योग्य सुनने को मिल गया। ऐसा ही अभिप्राय अनेक प्रतिभागियों का था। यह हिंदी का ही चमत्कार था कि मरण विषय पर व्याख्यान सुनकर भी पूरी सभा प्राणवंत हो उठी।

दिसंबर-2016 में जब कन्नड़ विश्वविद्यालय, हम्पी में प्राकृत ग्रंथ मूलाचार के दार्शनिक पक्ष पर अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी हुई, तब भी मैंने वहाँ हिंदी में व्याख्यान दिया था, जिसे खूब सराहना मिली थी। वस्तुत: जहाँ तक भारतीय दर्शन और संस्कृति की बात है, उसे हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में जिस संपूर्णता से अभिव्यक्ति दी जा सकती है, संभवत: उतनी संपूर्णता के साथ अंग्रेजी में नहीं दी जा सकती है।

-डॉ. दिलीप धींग, अतिथि संपादकीय

जैन संस्कृति में वर्षा चातुर्मास

जैन संस्कृति में वर्षा चातुर्मास
विश्वास है संदेश खास है
जीवन चर्या में परिष्कार का
मन में अटूट विश्वास है।
करो आलस्य प्रमाद का त्याग,
संत प्रवचन श्रवण से
बढ़ाओ अनुराग,
सुश्रावक कहलाओ
भद्र जनों मन को निर्मल बनाओ
और आध्यात्मिक चिंतन परक
अवसर का पूरा-पूरा लाभ पाओ।
वर्षा चातुर्मास
आत्मा रूपी खेत में
धर्म बीजारोपण का सही समय है
धर्म साधना हेतु भाग्योदय है
जो भीतर की प्यास बुझाने वाली
अमृतमयी वाणी की
ज्ञान गंगा के जल का पान कराएगा
स्वयं को निर्दोष बनाने में
तप संयम साथ निभायेगा।
वर्षा चातुर्मास का समय
मतभेद, कटुता, झगड़े मिटाते हुए
जीवन को संवारने
संत सत्संग कराता है
धर्माराधन कराकर
अज्ञान रूपी तिमिर का
नाश करते हुए
हृदय को ज्ञान रूपी प्रकाश से
आलोकित करता है।
वर्षा चातुर्मास देता प्रेरणा
स्व क्लयाण के साथ
जन कल्याण की
सामाजिक जीवन की शुद्धता हेतु
पर्युषण के लोकोत्तर विधान की।
यह समय जीवन महल के लिए
करता नींव का निर्माण
जगाकर सुप्त आत्मा को
चेतना से रिश्ता बनाता
देकर पाप मुक्त होने की प्रेरणा
सम्यक पथ पर बढ़ाता।
वर्षा चातुर्मास व्यक्ति को
अन्तर्मुखी बनाता
तभी साधक
दान, तपस्या, स्वाध्याय की
आत्म शोधक प्रवृत्तियों से
जुड़ जाता।
संवत्सरी पर क्षमायाचना कर
मैत्री दिवस पर
परस्पर मत भेद मिटाते हुए
एक-दूसरे के मन को
जीतने का अवसर लाभ पाता।

- डॉ. रमेश 'मयंक'

बालवाटिका

गिलहरी और चूहा

कहा गिलहरी ने चूहे से, सुनलो भाई मेरी बात।
क्यों बिल में तुम घुसकर रहते, सहते रहते दु:ख दिन रात।।
आओ अब तुम साथ हमारे, पेड़ों पर चढ़कर खेलें।
दौड़ लगायें कूदे फांदे, चाहे जितने फल लेलें।।
सदा अंधेरे में रहते हो, आज उजाले में आओ।
किसका डर है तुमको इतना, यह तो मुझको बतलाओ।।
चूहा यह सुन हंसकर बोला, बहिना तुम सच कहती हो।
पेड़ तुम्हारा सुन्दर घर है, उस पर सुख से रहती हो।।
किंतु अंधेरे के हम वासी, बिल ही हमारा घर-परिवार।
अंदर ही अंदर चलते हैं, मीलों तक कतार के लार।।
कभी-कभी तो तुम भी आओ, देखो कैसे हमारे ठाठ।
बिल्ली मौसी के आक्रामक, तेवर बने मौत के घाट।।
इसीलिए हम गुपचुप रहते, तुम स्वतंत्र नारी शक्ति।
हम भीतर के जीव यशस्वी, तुमसे भिन्न हमारी भक्ति।

नोट : बच्चे स्कूल में साप्ताहिक सभा या समारोह में गिलहरी-चूहे का इस कविता के माध्यम से अभिनय कर सकते हैं।

जूतों का मनोविज्ञान और उपयोग प्रसंग

- नरपतसिंह राठौड़ -

आदमी जूते के साथ नहीं जन्मता। सहज ही अन्दाजा लगाया जा सकता है कि पृथ्वी पर व्यक्ति के अपने जीवनकाल में ठीक कब से जूता पहनना प्रारम्भ हुआ, इसका निश्चय कर पाना सम्भव नहीं क्योंकि उसकी बनावट में प्रयुक्त होने वाला पदार्थ विनष्ट हो जाता है, बचा नहीं रहता। आज भी अनेकों असभ्य कही जाने वाली जातियों के लोग जूता नहीं पहनते। जैन साधु भी जूता नहीं पहनते। क्या हम सभी ऐसा नहीं कर सकते?

शिकार युग के आदमी को बहुत जल्द यह ज्ञान हो गया था कि या तो वह अपने शिकार को प्राप्त करने की ओर ही अपना ध्यान दे सकता है या फिर अपने भागते पांवों को कांटों, पत्थरों आदि से बचाने की ओर ही। बिना शिकार के जीना दूभर था किन्तु पांवों को बचाना भी बहुत जरूरी था। अत: वह पेड़ों की छाल और पशुओं की खाल अपने पांवों के चारों ओर लपेट कर उस ओर से निश्चिन्त होने लगा। यही जूते का प्रथम आविष्कार था।

सभ्यता के विकास के साथ जूते का विकास और प्रयोग भी बढ़ता गया। पहले पहल का जूता बहुत ही सीधा सादा था। अर्थात् पांव के चारों ओर खाल को लपेट चर्म पट्टियों से बांध लिया जाता था। मोकेसिन जूते का यही मूल रूप है, जिसमें धीरे-धीरे अनेक परिवर्तन होते रहे।

जूते का दूसरा प्रारम्भिक रूप साधारण सेण्डल का था। इसमें चमड़े के तले को चर्म-पट्टियों द्वारा पांव में अटका दिया जाता था। अब तक ज्ञात सबसे पुराना जूता मिश्र में प्राप्त पेयिरस से गूंथ कर बनाया गया सेण्डल है जो दो हजार वर्ष ईसा पूर्व का बताया जाता है।

राजस्थान में जूती को 'पगरखी' कहा जाता है यानी (पग) पैर की (रखी), रक्षा करने वाली, उसे सहेजने वाली। अर्थात् जूती न केवल हमारे पैर की खुद की एवं ऊबड़ खाबड़ जमीन, पत्थर-कंकड़, कांटे, सर्दी, गर्मी, सीलन, कीचड़, सांप, बिच्छू आदि से रक्षा करती है बल्कि उसे आराम से सहेज कर भी रखती है। मनुष्य ने जूती का आविष्कार इन विभिन्न कठिनाइयों से बचते हुए भी अपनी श्रमशील और क्षमता को अबाध एवं सहज बनाने के लिए ही किया है। व्यास भाष्य में कहा भी है- 'उपानदगूढ़ पादस्य सर्वा चर्मावृतेव भू:' अर्थात् जिसके पावं जूती से ढंके हैं, उसके लिए समस्त भूमि पर चमड़ा बिछा है।

देसी जूती बहुतायत से जो प्रयोग में लाते हैं उनके अनुसार अच्छी जूती वह है जो-

(1) पांव में न तो ढीली हो न तंग।

(2) वजन में हल्की हो।

(3) पहनने उतारने में आसान हो।

(4) पांव के अनुसार आकार ग्रहण करने की क्षमता रखती हो। अर्थात् जिसके खोल का चमड़ा मुलायम और अच्छा कमाया हुआ हो।

(5) पांव को काटे नहीं।

(6) हर मौसम और हर जगह पहनी जा सके।

(7) वाजिब कीमत की हो। अर्थात् ग्राहक की क्रय क्षमता में आती हो।

(8) मजबूत और टिकाऊ हो।

(9) देखने में सुन्दर हो।

यह जरूरी नहीं कि हर जोड़े में ये सभी गुण एक साथ पाये जाते हों। फिर भी कोशिश यही रहती है कि ये सभी गुण खरीदे जाने वाले जोड़े में अवश्य उपलब्ध हों। जो कारीगर ऐसा जूता बना देता है, उसके पास खरीददारों की कमी नहीं रहती बल्कि उसके पास इतनी मांग रहने लगती है कि उसे समय पर पूरा करना उसके लिए सम्भव नहीं रहता।

यह सही है कि वर्तमान में देसी जूती सदियों से चली आ रही है और अपने क्षेत्र में सफल एवं कारगर भी रही है। यह भी नहीं कि सदियों के दौरान में यह बिना बदले जैसी भी वैसी ही चली आ रही है। इसकी रूप सज्जा और बनावट में स्थान एवं समय के अनुरूप परिवर्तन होते रहे हैं।

अमेरिकी भविष्य ज्ञाता डॉ. कीरी ने जूते के मनोविज्ञान का अध्ययन करने के लिए सात महीने तक मोची का काम किया। उसका कहना था कि जिस व्यक्ति के बांये जूते की एड़ी अधिक घिसी हो वह प्रतिभावान होगा।

जिस व्यक्ति के जूते का दांया तलवा अधिक घिसा हो वह निरा बुद्धू, आलसी तथा कृपण होगा। जिस महिला की दांई एड़ी घिसी हो वह सेक्सी, उन्मादिनी तथा अपराधिनी होती है। जिसकी एड़ियां अधिक ऊंची स्वभावत: होती हैं वे रोमांटिक प्रकृति की होने के साथ ही कृत्रिम व्यहवारवादी होती हैं।

प्राय: लाल रंग के जूते पहनने वाला पुरुष दकियानूस, परम्परावादी और अन्धविश्वास प्रिय होता है। जिनके जूतों में कई रंगों का समावेश होता है, उनमें कला के प्रति अभिरूचि होती है पर कलाकार कदापि नहीं होते। जो स्वभाव से ही काले जूते पसन्द करते हैं वे बड़े गम्भीर प्रवृत्ति के तथा विश्वसनीय व्यक्ति होते हैं। जिस काम को सोचते हैं, उसे पूरा करके ही दम लेते हैं। दृढ़ता की मात्रा इनमें प्रबल होती है। जो पुरुष या स्त्रियां प्राय: सांभर के जूते पहनते हैं, वे अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के होते हैं। वे गम्भीरतापूर्वक सोच सकते हैं, चिन्तन कर सकते हैं पर मंच पर व्यक्त नहीं कर सकते। फीतेदार जूतियां पसन्द करने वाली महिलाओं में नारीत्व एवं मातृत्व की भावना कम होती है। वे आत्ममुग्धा होती हैं।

पुरुषों जैसा काम करने में इनका अधिक मन लगता है। नारी सुलभ सहजता इनमें नहीं होती। जिन स्त्रियों के सेण्डिल में बहुतेरे छिद्र होते हैं, वे शंकालु, अतृप्त तथा आत्म-क्लेशी होती हैं। इन्हें समाज में आदर नहीं मिलता।

विदेशी जूते की तरह ही देसी जूती का अपना पूरा इतिहास है। आवश्यकता, सामाजिक स्थिति, सान्दर्यबोध तथा फैशन के प्रयोग के प्रभाव से वह अपने को अछूता नहीं रख सकी है। जूती के रंग-रूप में, स्थान, काल, अवसर और उपभोक्ता की दृष्टि से भार में इतने विविध प्रयोग हो चुके हैं कि यदि उनको इकट्ठा किया जाय तो अच्छा खासा वैविध्य सम्पन्न संग्रहालय तैयार हो सकता है।

हरियाणा में जूते की सादगी और मजबूती के ऊपर विशेष ध्यान दिया जाता है तो राजस्थान और गुजरात में मजबूती के साथ-साथ सुन्दर सुरंगी कढ़ाई की 'कामदार' जूतियों को बहुत चाहा जाता है। जूती पर कढ़ाई पंजाब में भी पसन्द की जाती है किन्तु वहां स्वर्णिम तारों का 'तिल्ले' का काम ही अधिक चलता है।

मध्यप्रदेश के जंगली इलाकों में जूते की सांप-बिच्छुओं को डरा देने वाली चर्र मर्र की आवाज किसानों को आकर्षित करती है तो बुन्देलखण्डी जूती के पांव को आराम से सहेज रखने की मुलायम पकड़ व रूप-रंग के लिहाज से अनेक नाम भी रहे हैं- जैसे बागड़ी, सलेमशाही, दिलीवाल, डेड हाशिया, कामदार, पंजाबी, गोलपंजा, गवारू, चमरौंधा, पिशावरी, पिथोरी, राठी, घेटा, जुस्ता, ढोंचा, नागरा, कपामापी, पाउपौश, गुरगाली, डल्टोनी, मग्जीदार, बच्छीदार, बनाती, चोटीदार, कन्नी खुस्सा, मोजड़ी आदि प्रत्येक किस्म एक प्रयोग रहे हैं। किसी न किसी अभिकल्पित समस्या का समाधान ढूंढ़ने में एक चाहना है कोई। खेद है जिसने इन विविध रूपों में अपना हल ढूंढ़ा है शेष फिर भी नहीं आया बावजूद इसके यह भी सही कि इसके मूल अभिकल्पन में कोई फर्क नहीं आया। सभी परिवर्तनों के बावजूद भी अपने मूल रूप में यह वही रही।

साईं तिरुपति यूनिवर्सिटी, उदयपुर

(यूजीसी अधिनियम 1956 की धारा 2(एफ) के तहत स्वीकृत)

Web: www.saitirupatiuniversity.ac.in | Email: info@saitirupatiuniversity.ac.in

प्रवेश प्रारंभ (सत्र 2024-25)

PIMS वेंकटेश्वर इंस्टिट्यूट ऑफ़ पैरामेडिकल साइंसेज

(राजस्थान पैरामेडिकल कौंसिल. जयपर से मान्यता प्राप्त)

चार वर्षीय डिग्री पाठ्यक्रम | योग्यता: 10+2 (PCB)

- बैचलर इन मेडिकल लैब टेक्नोलॉजी
- बैचलर इन रेडिएशन टेक्नोलॉजी
- बैचलर इन ऑप्थैल्मिक टेक्नोलॉजी

अंतिम दिनांक: 20 सितंबर 2024

डिप्लोमा (2 वर्षीय) पाठ्यक्रम

- डिप्लोमा इन मेडिकल लैब टेक्नोलॉजी
- डिप्लोमा इन रेडिएशन टेक्नोलॉजी
- डिप्लोमा इन ऑपरेशन थिएटर टेक्नोलॉजी
- डिप्लोमा इन कैथ लैब टेक्नोलॉजी
- डिप्लोमा इन ईसीजी टेक्नोलॉजी
- डिप्लोमा इन डायलिसिस टेक्नोलॉजी
- डिप्लोमा इन ophthalmic टेक्नोलॉजी
- डिप्लोमा इन ब्लड बैंक टेक्नोलॉजी
- डिप्लोमा इन ईईजी टेक्नोलॉजी
- डिप्लोमा इन एंडोस्कोपी टेक्नोलॉजी

मल्टी सुपरस्पेशियलिटी पिम्स अस्पताल में प्रशिक्षण प्राप्त करें।

संपर्क करें : 9257016003, 9587890142

PIMS वेंकटेश्वर इंस्टिट्यूट ऑफ़ फार्मेसी

(फार्मेसी कौंसिल ऑफ़ इंडिया से मान्यता प्राप्त)

- B. Pharm (बैचलर ऑफ़ फार्मेसी)
- D. Pharm (डिप्लोमा इन फार्मेसी)

9257016004, 9587890082

PIMS वेंकटेश्वर कॉलेज ऑफ़ फिजियोथेरेपी

- B.P.T. (बैचलर ऑफ़ फिजियोथेरेपी)
- M.P.T. (मास्टर ऑफ़ फिजियोथेरेपी)

9257016002, 958789082

PIMS वेंकटेश्वर स्कूल/कॉलेज ऑफ़ नर्सिंग

- B.Sc. Nursing (बैचलर ऑफ़ साइंस इन नर्सिंग)
- M.Sc. Nursing (मास्टर ऑफ़ साइंस इन नर्सिंग)
- G.N.M. (जनरल नर्सिंग एंड मिडवाइफरी)

9587890082, 9257016001

प्रवेश के लिए संपर्क करे : 9587890082, 9358883194

PIMS HOSPITAL UMARDA पिम्स हॉस्पिटल, उमरड़ा, उदयपुर

NABH ACCREDITED

इमरजेंसी : 0294-3510000

EMAIL : INFO@PACIFICMEDICALSCIENCES.AC.IN |
WEB : WWW.PACIFICMEDICALSCIENCES.AC.IN |
उमरड़ा रेलवे स्टेशन रोड़, उदयपुर (राज)

बाजार / समाचार

डॉ. व्यास को कथा विभूषण श्री सम्मान

उदयपुर (ह. सं.)। पूर्व शिक्षा उपनिदेशक एवं साहित्यकार डॉ. श्याम मनोहर व्यास को के. बी. हिन्दी सेवा न्यास द्वारा वर्ष 2024 में 10वें अंतर्राष्ट्रीय साहित्यकार सम्मान समारोह में उनकी पुस्तक 'नये आकाश की तलाश' (कहानी संग्रह) पर बाबूलाल शर्मा स्मृति 'कथा विभूषण श्री सम्मान' से सम्मानित किया जाएगा। न्यास के अध्यक्ष डॉ. सतीशचन्द्र शर्मा 'सुधांशु' ने बताया कि इसके अन्तर्गत इन्हें शॉल, सम्मान पत्र, राशि, स्मृति चिन्ह आदि प्रदान किये जायेंगे। यह सम्मान समारोह बसौली (बदायूं) उत्तरप्रदेश में 10 नवम्बर को आयोजित होगा।

इन्दिरा आईवीएफ ग्रुप का 150वां हॉस्पिटल शुरू

उदयपुर (ह. सं.)। भारत में नि:संतानता उपचार के क्षेत्र में अग्रणी ग्रुप इन्दिरा आईवीएफ ने अपना 150वां हॉस्पिटल आरम्भ करके एक उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल की है। यह विस्तार देश के आईवीएफ अस्पतालों के सबसे बड़े नेटवर्क के रूप में इन्दिरा आईवीएफ की स्थिति को अधिक मजबूत करता है। छोटे शहरों के नि:संतान दम्पतियों को आईवीएफ उपचार उपलब्ध करवाने के लिए ग्रुप के ज्यादातर हॉस्पिटल टियर 2 और टियर 3 शहरों में संचालित किये जा रहे हैं।

इन्दिरा आईवीएफ ग्रुप के चेयरमैन डॉ. अजय मुर्डिया ने कहा कि हमारा मिशन हमेशा उन्नत फर्टिलिटी उपचार को सभी के लिए सुलभ बनाना और अधिकार के रूप में उपलब्ध करवाना है। हम अपने 150 वें केंद्र और 150,000 से अधिक सफल आईवीएफ प्रोसिजर को सेलिब्रेट कर रहे हैं। हम शहरों और ग्रामीण क्षेत्रों में नि:संतानता उपचार और व्यक्तिगत देखभाल पहुंचाने में सफल हो रहे हैं। इन्दिरा आईवीएफ के एमडी और कॉ-फाउण्डर डॉ.नितिज मुर्डिया ने कहा कि टियर 2 और टियर 3 शहरों में हमारा विस्तार इन क्षेत्रों में प्रजनन चुनौतियों का समाधान करता है। सीईओ और कॉ-फाउण्डर डॉ. क्षितिज मुर्डिया ने कहा कि इंदिरा आईवीएफ ने भारत के अधिकांश जिलों और शहरों को कवर करने के लिए अपने हॉस्पिटल के नेटवर्क का सफलतापूर्वक विस्तार किया है, जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि एडवांस फर्टिलिटी ट्रीटमेंट अब केवल टियर 1 शहरों तक ही सीमित नहीं हैं।

मोटोरोला ने लॉन्च किया रेज़र 50

उदयपुर (ह. सं.)। मोटोरोला ने अपने बहुप्रतीक्षित स्मार्टफोन मोटोरोला रेज़र 50 के लॉन्च के साथ फिर से फोल्डेबल स्मार्टफोन सेगमेंट में हलचल मचाई है, जो रेज़र फ्रैंचाइज़ी में एक नया और महत्वपूर्ण जोड़ है। रेज़र फ्रैंचाइज़ में इस नवीनतम पेशकश से स्मार्टफोन तकनीक में निरंतर प्रगति देखने को मिलती है, जिसमें सेगमेंट का सबसे बड़ा 3.6'' एक्सटर्नल डिस्प्ले शामिल है, जो सीधे गूगल जेमिनी एक्सेस प्रदान करता है। मोटो एआई द्वारा संचालित प्रभावशाली 50एमपी कैमरा सिस्टम के साथ, जिसमें ओआईएस और इंस्टेंट ऑल पिक्सल फोकस शामिल है, रेज़र 50 अत्याधुनिक तकनीक प्रदान करता है। यह त्योहारी सीजन में सीमित अवधि के विशेष प्रारंभिक मूल्य पर केवल 49,999 रुपए में उपलब्ध है।

टी.एम. नरसिम्हन, प्रबंध निदेशक, मोटोरोला इंडिया ने कहा कि फ्लिप फोन टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में अग्रणी होते हुए, हमने एक बार फिर से रेज़र 50 के लॉन्च के साथ इस सेगमेंट में एक नया मानक स्थापित किया है। यह अभिनव और इंटेलीजेंट डिवाइस हमारे डिज़ाइन, एआई तकनीक, और उपयोगकर्ता अनुभव की सीमाओं को आगे बढ़ाने की हमारी अडिग प्रतिबद्धता का प्रतिनिधित्व करता है।

'प्लास्टिक को कहे ना अभियान का आगाज'

उदयपुर (ह. सं.)। प्लास्टिक को कहे ना और महिला सशक्तिकरण जागरुकता अभियान की शुरूआत पिम्स हॉस्पिटल, उमरड़ा के सहयोग से राहड़ा फाउंडेशन और राजस्थान राज्य

प्रदूषण नियंत्रण मंडल द्वारा 10 हजार से ज्यादा कपडे से बने बैग वितरण के साथ हुई। इस मौके पर कॉमर्स कॉलेज के बाहर गवरी के दौरान 300 से ज्यादा बैग गवरी कलाकारों और दर्शकों को बांटे गए।

नेहरु हॉस्टल में आयोजित समारोह में राहडा फाउंडेशन की संस्थापक अर्चनासिंह चारण ने कहा कि पर्यावरण को बचाने और महिलाओं को सशक्त करने के इस कार्य में पिम्स हॉस्पिटल उमरड़ा के चेयरपर्सन आशीष अग्रवाल, निदेशक शीतल अग्रवाल, डॉ. देवेन्द्र जैन तथा प्रदूषण नियंत्रण मंडल के अधिकारियों द्वारा दिया गया सहयोग अभूतपूर्व है। श्रीमती चारण ने कहा कि जिस बड़ी मात्रा में प्लास्टिक थैलियों का इस्तेमाल हो रहा है उससे पर्यावरण को जो नुकसान हो रहा है, उसे रोकने के लिए यह अभियान शुरु किया है। उन्होंने बताया कि प्रारंभ में 10 हजार कपड़े के बैग वितरण करने से इस वृहद अभियान की शुरुआत की गई है जिसे पिम्स हॉस्पिटल, उमरड़ा का पूरा सहयोग मिला है। कपड़े के बैग बनाने का काम सुखाड़िया विश्वविद्यालय के फैशन डिजाइन विभाग को दिया गया। महिलाओं को ही बैग बनाने रोजगार दिया गया है जिससे महिलाएं भी सशक्त हो रही हैं।

प्रदूषण नियंत्रण मंडल के आरओ शरद सक्सेना, डॉ. उदित सोनी ने कहा कि आज सबसे ज्यादा जरुरत पर्यावरण को सुरक्षित रखने की है तभी हमारी आने वाली पीढ़ियां सुरक्षित रह पाएंगी। समारोह में आरएनटी मेडिकल कॉलेज की महिला रोग विशेषज्ञ डॉ. अलका अग्रवाल, समाजसेवी डाक्टर मीनाक्षी गर्ग ने इस अभियान को आगे बढाने में अपना पूरा समर्थन दिया और कहा कि पर्यावरण संरक्षण के लिए महिलाओं को आगे लाने के भरपूर प्रयास किए जाएंगे। कार्यक्रम में डोली मोगरा, रेखा पुरोहित, सरला अग्रवाल व जुली शर्मा ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम के समापन पर अतिथियों को पौधे व मोमेंटो प्रदान कर उनका सम्मान किया गया।

एलएंडटी फाइनेंस लि. ने की डिजिटल सखी प्रोजेक्ट की शुरुआत

उदयपुर (ह. सं.)। देश की प्रमुख गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (एनबीएफसी) में शामिल एलएंडटी फाइनेंस लि. (एलटीएफ) ने राजस्थान के उदयपुर, राजसमंद और चित्तौड़गढ़ में अपनी फ्लैगशिप कॉरपोरेट सामाजिक दायित्व (सीएसआर) परियोजना 'डिजिटल सखी' की शुरुआत की है। डिजिटल सखी का उद्देश्य डिजिटल वित्तीय साक्षरता के जरिये महिलाओं को सशक्त बनाना है ताकि वे अपने समुदाय में सकारात्मक बदलाव लाने के साथ आजीविका के स्थायी साधन पैदा कर सकें।

कंपनी इन उद्देश्यों को हासिल कर ग्रामीण महिलाओं और उनके परिवारों के जीवन में महत्वपूर्ण सकारात्मक बदलाव लाना चाहती है। साथ ही, इससे ग्रामीण क्षेत्रों में वित्तीय समावेशन, उद्यमशीलता और सतत विकास को बढ़ावा मिलेगा। डिजिटल सखी कार्यक्रम सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल (एसडीजी)-5 लैंगिंक समानता पर केंद्रित है। इसकी मदद से ग्रामीण इलाकों में महिलाओं को डिजिटल वित्तीय साक्षरता, नेतृत्व और प्रौद्योगिकी के मोर्चे पर व्यापक रूप से प्रशिक्षित किया जाता है।

एलटीएफ के प्रबंध निदेशक एवं सीईओ सुदीप्ता रॉय ने कहा कि नौ राज्यों में डिजिटल सखी परियोजना के सफल कार्यान्वयन के बाद हमें राजस्थान में अपने प्रमुख सीएसआर प्रोजेक्ट को लॉन्च कर प्रसन्नता हो रही है। इस पहल के साथ हम न सिर्फ ग्रामीण समुदायों की महिलाओं को सशक्त बना रहे हैं, बल्कि डिजिटल विभाजन को पाटने और बड़े पैमाने पर लैंगिक समानता हासिल करने में भी मदद कर रहे हैं। सामाजिक, आर्थिक और डिजिटल ताकतों का मिश्रण हमें अधिक समावेशी, समृद्ध एवं टिकाऊ समाज बनाने में मदद कर रहा है। हम सभी वर्गों के उज्ज्वल भविष्य की इस यात्रा का हिस्सा बनने पर गर्व महसूस करते हैं।

एलटीएफ में कंपनी सचिव एवं चीफ सस्टेनेबिलिटी ऑफिसर अपूर्वा राठौड़ ने कहा कि हमारी डिजिटल सखियां उदयपुर, राजसमंद और चित्तौड़गढ़ में ग्रामीण समुदायों के बीच डिजिटल वित्तीय साक्षरता प्रदान करने में सबसे आगे रहेंगी। वे ग्रामीण समुदायों को सरकारी पहलों से जोड़ने के साथ यह सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगी कि लोग विभिन्न लाभों के बारे में जागरूक हों और उनका उपयोग कर सकें। इसके अतिरिक्त, डिजिटल सखियां महिलाओं को वित्तीय रूप से समावेशी और उद्यमी बनाने के लिए सशक्त करेंगी।

एलटीएफ इस परियोजना को मंजरी फाउंडेशन के सहयोग से संचालित करेगा। डिजिटल सखी परियोजना की शुरुआत 2017 में की गई थी। तब से अब तक इसके जरिये 1,770 से अधिक महिलाओं को डिजिटल सखी के रूप में तैयार किया गया है जिन्होंने 45 लाख से अधिक लोगों को लाभान्वित किया है और 14,000 से अधिक महिला उद्यमियों को कौशल प्रदान कर सशक्त बनाया है। पिछले महीने डिजिटल सखी प्रोजेक्ट को उत्तरप्रदेश के कुशीनगर और बिहार के सहरसा तक विस्तारित किया गया। राजस्थान के अलावा, वर्तमान में डिजिटल सखी परियोजना कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु, बिहार, उत्तरप्रदेश और पश्चिम बंगाल में सक्रिय रूप से चल रही है।

एचडीएफसी बैंक और जेएलआर इंडिया में एमओयू

उदयपुर (ह. सं.)। एचडीएफसी बैंक और जेएलआर इंडिया ने ऑटो फाइनेंसिंग के लिए एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए हैं। बैंक अब जेएलआर का पसंदीदा वाहन फाइनेंसर होगा। इससे उपभोक्ताओं को विशेष फाइनेंसिंग योजनाएं,विशेष ऑफर/इवेंट और प्राथमिकता वाली सेवाएं/ संलग्नता जैसे कई लाभ मिलेंगे।

एचडीएफसी बैंक के रिटेल एसेट्स के ग्रुप हेड अरविंद वोहरा ने कहा कि हम जेएलआर जैसे प्रतिष्ठित और महत्वाकांक्षी ऑटोमोटिव ब्रांड के साथ इस साझेदारी को लेकर उत्साहित हैं। बैंक ग्राहकों को सहज अनुभव प्रदान करने के लिए अपनी मजबूत निष्पादन क्षमताओं का लाभ उठाएगा। जेएलआर इंडिया के प्रबंध निदेशक राजन अंबा ने कहा कि हमारे डीलर पार्टनर हमारे व्यवसाय के अभिन्न अंग हैं, और हमें उनके व्यवसाय को आसान बनाने में मदद करने के लिए समाधान विकसित करने में सक्षम होने पर प्रसन्नता हो रही है। अखिलेश कुमार रॉय, बिज़नेस हेड, ऑटो लोन्स एंड इन्वेंटरी फाइनेंस एचडीएफसी बैंक ने कहा कि दोनों संगठनों के एक साथ आने से कार खरीदने का अनुभव बेहतर होगा। ग्राहक अब कई मूर्त और अमूर्त लाभों का आनंद लेंगे। इसका उद्देश्य दोनों प्रमुख ब्रांडों की संयुक्त क्षमता का लाभ उठाकर ग्राहकों को निर्बाध फाइनेंसिंग विकल्प और आधुनिक लक्जरी कार खरीदने का अनुभव प्रदान करना है। श्री अंबा और श्री वोहरा ने जेएलआर मॉडल की पूरी रेंज को शामिल करने वाले इस समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। ये सेवाएँ जेएलआर के सभी एक्सक्लूसिव शोरूम और डीलरशिप पर उपलब्ध होंगी।

शैल्बी व मोनोग्राम टेक्नोलॉजीज में करार

उदयपुर (ह. सं.)। भारत की अग्रणी मल्टीस्पेशलिटी हॉस्पिटल, शैल्बी लि. ने ऑर्थोपेडिक सर्जरी में विशेषज्ञता वाली एआई-संचालित रोबोटिक्स कंपनी मोनोग्राम टेक्नोलॉजीज इंक. के साथ रणनीतिक साझेदारी की घोषणा की है। यह सहयोग भारत में एक बहुकेन्द्रीय क्लिनिकल ट्रायल(परीक्षण) आयोजित करने पर केंद्रित होगा, जिसमें मोनोग्राम के टीकेए सिस्टम की सुरक्षा और प्रभावशीलता को प्रदर्शित किया जाएगा। यह घुटने के रिप्लेसमेंट(प्रतिस्थापन) के लिए डिज़ाइन किया गया एक प्रिसिशन रोबोटिक सर्जिकल सिस्टम है।

शैल्बी लि. के अध्यक्ष डॉ. विक्रम शाह ने कहा कि दुनिया के सबसे बड़े आर्थोपेडिक हॉस्पिटल ग्रूप के रूप में, हमें अपने प्रतिष्ठित सर्जनों के साथ पाइपलाइन उत्पादों सहित बाजार में अग्रणी रोबोट और एडवांस टेक्नोलोजी का मूल्यांकन करने का विशेषाधिकार मिला है। हमने टीकेए सिस्टम और अगली पीढ़ी की पाइपलाइन को प्रत्यक्ष रूप से देखा है और निश्चित रूप से कह सकते हैं कि वे जिस पर काम कर रहे हैं, वह आर्थोपेडिक चिकित्सा को हमेशा के लिए बदल देगा। हम मोनोग्राम के साथ इस साझेदारी से उत्साहित हैं और हमारा मानना है कि संयुक्त राज्य अमेरिका और विश्व स्तर पर उनकी सिस्टम के लिए बाजार की संभावनाएं बहुत महत्वपूर्ण हैं और बहुत तेजी से बढ़ सकती हैं। हम मोनोग्राम टीम के साथ काम करने और आने वाले महीनों में अपने संबंधों को व्यापक बनाने के लिए उत्सुक हैं।

मोनोग्राम टेक्नोलॉजीज इंक के सीईओ बेन सेक्सन ने कहा कि भारत में रोबोटिक्स का प्रवेश अभी कम है, लेकिन यह तेजी से आगे बढ़ रहा है और हमारा मानना है कि, सैकड़ों प्रणालियों के बाजार में बहुत संभावनाएं हैं। शैल्बी एक विश्व स्तरीय संगठन है और हम उनके सर्जनों की क्षमता और देखभाल के स्टैंडर्ड से बहुत प्रभावित हैं। हम संयुक्त राज्य अमेरिका सहित विश्व स्तर पर शाल्बी की महत्वाकांक्षाओं और विकास योजनाओं से सहमत हैं। लॉन्च के बाद मोनोग्राम की योजना मार्केटिंग के लिए अमेरिकी अध्ययन से प्राप्त नैदानिक डेटा का लाभ उठाने तथा अंतर्राष्ट्रीय मंजूरी और व्यावसायीकरण में सहायता करने की है। दोनों कंपनियां एक अत्यंत सहज, सुरक्षित और सटीक बहु-अनुप्रयोग रोबोटिक प्लेटफॉर्म की महत्वपूर्ण नैदानिक आवश्यकता देखती हैं।

डॉ. नाहर सांई तिरूपति विश्वविद्यालय में प्रेसिडेन्ट नियुक्त

उदयपुर (ह. सं.)। सांई तिरूपति विश्वविद्यालय के चेयरपर्सन आशीष अग्रवाल द्वारा नियमानुसार डॉ. प्रशान्त नाहर को विश्वविद्यालय के प्रेसिडेन्ट (वाइस चांसलर) के पद पर

नियुक्त किया गया है। डॉ. नाहर पूर्व में पेसिफिक डेन्टल कॉलेज उदयपुर में प्रोफेसर के पद पर कार्यरत थे। वर्तमान में सांई तिरूपति विश्वविद्यालय में मेडिकल, नर्सिंग फार्मेसी फिजियोथेरेपी, एमबीए एंड हॉस्पिटल एटमिनिस्ट्रेशन एवं पैरामेडिकल साईन्स के अन्तर्गत पाठ्यक्रम संचालित है। इन पाठ्यक्रमों में नियमित रूप से लगभग 3000 विद्यार्थी अध्ययन कर रहे हैं।

उदयपुर में दिखी दुर्लभ 'एनोमालूस नवाब' तितली

उदयपुर (ह. सं.)। नैसर्गिक सौंदर्य से लकदक समृद्ध जैव विविधता वाले मेवाड़-वागड़ अंचल में दुर्लभ कीट-पतंगों, वन्यजीवों व वनस्पति के देखे जाने का सिलसिला जारी है। इसी श्रृंखला में सेक्टर 14 में एक दुर्लभ तितली 'एनोमालूस नवाब' दिखाई दी है।

तितली विशेषज्ञ मुकेश पंवार ने बताया कि सेक्टर 14 में पर्यावरणीय विषयों की जानकार और तितलियों पर शोध कर रही नेहा मनोहर ने अपने गार्डन में इस तितली को देखा है। यह तितली अंजीर के फल से रस पी रही थी। पंवार ने बताया कि इसका वैज्ञानिक नाम चरैक्स एग्रेरियस है और खुले पंखों में इसका आकार 9-10 सेमी होता है। यह तितली आमतौर पर खेर के पेड़ पर अपनी लाईफ साइकिल पूरा करती है और पके फलों का रस पीना पसंद करती है। जंगल इन्हें ज्यादा पसंद है परंतु शहरी क्षेत्र में इसका दिखाई देना दुर्लभ है। उन्होंने बताया कि विश्व में पहली बार इसकी लाइफ साइकल सागवाड़ा से की थी। आमतौर पर राजस्थान में इसे कॉमन नवाब ही समझा जाता रहा है। पुराने रिसर्च पेपर्स में 'एनोमालूस नवाब' का उल्लेख नहीं मिलता है। देश के ख्यातनाम तितली विशेषज्ञ पीटर स्मैटिक ने उदयपुर के शहरी क्षेत्र में 'एनोमालूस नवाब ' को देखे जाने को दुर्लभ बताया है। उन्होंने कहा कि अधिकांश वन क्षेत्रों में पाई जाने वाली एनोमालूस नवाब तितली अधिक नमी वाले वन क्षेत्रों की अपेक्षा कम नमी वाले वन क्षेत्रों में ही दिखाई देती है।

पुरावतों का इतिहास पुस्तक का विमोचन
- 22 भामाशाह सम्मानित-

उदयपुर (ह. सं.)। प्रताप शोध प्रतिष्ठान, भूपाल नोबल्स संस्थान द्वारा प्रकाशित 'पुरावतों का इतिहास' पुस्तक का विमोचन प्रताप शोध प्रतिष्ठान व पुरावत संकलन समिति के संयुक्त तत्वाधान से मुख्य अतिथि विश्वराजसिंह मेवाड़ के सान्निध्य में विद्या प्रचारिणी सभा के कार्यवाहक अध्यक्ष प्रो. शिवसिंह कच्छेर, डॉ. महेंद्र सिंह आगरिया, मंत्री विद्या प्रचारिणी सभा, मोहब्बतसिंह रूपाखेड़ी, प्रबंध निदेशक, भूपाल नोबल्स संस्थान, शक्तिसिंह कराई, वित्तमंत्री विद्या प्रचारिणी सभा, राजेंद्रसिंह, संयुक्त मंत्री विद्या प्रचारिणी सभा, डॉ. भूपेंद्रसिंह राठौड़ द्वारा पुस्तक का विमोचन किया गया।

विश्वराजसिंह मेवाड़ ने कहा कि यह इतिहास पुरखों के त्याग को ही नहीं दर्शाता है अपितु पीढ़ी-दर-पीढ़ी संस्कारों को भी जीवंत रखता है। भारतीय, संस्कृति, परम्परा हमारी विरासत है इसे संजोये रखने की जिम्मेदारी हम सभी की है। पुरखों के सत्कर्म से ही आज वंश परंपरा जीवित है जिन्हें जनाना सरदार आज भी अपने जीवन में संजोये हुए हैं। उन्होंने कहा कि प्रसन्नता का विषय है कि महाराणा प्रताप के 11वें पुत्र पूरणमल के वंशजों का इतिहास डॉ. भूपेंद्रसिंह राठौड़ ने लेखनी बद्ध किया है।

डॉ. महेंद्र सिंह आगरिया ने कहा कि प्रताप शोध प्रतिष्ठान निरंतर नए तथ्यों को उजागर करने हेतु शोध कार्य करता रहता है हमारा प्रयास यह है कि हम नए शोध कर प्रत्येक ठिकाने पर इतिहास का लेखन कर सकें। इसी क्रम में पुरावतों का इतिहास लेखन 45 ठिकानों पर अध्ययन कर पुस्तक के रूप में रखा।

कर्नल प्रो. शिवसिंह कच्छेर ने कहा कि वर्तमान, भविष्य एवं अतीत के लिए इतिहास लेखन जरूरी है। महाराज पूरणमल को पांच महाराणा की सेवा का सुअवसर मिला जिसका उन्होंने बखूबी निर्वहन किया। प्राथमिक स्रोतों से अध्ययन कर इस पुस्तक की रचना करना हर्ष का विषय है। प्रतिष्ठान ने 60 से अधिक पुस्तकों को प्रकाशित किया है। इस इतिहास को संजोये रखना आपका दायित्व है जो समाज में कई पुरुषार्थ को जन्म देगा से समाज को संबल प्राप्त होगा।

इस अवसर पर अतिथियों द्वारा 22 भामाशाहों को सम्मानित किया गया। संचालन डॉ. अनिता राठौड़ ने किया जबकि धन्यवाद भोपाल सिंह देवली ने दिया। समारोह में इतिहास प्रणेता उदयसिंह सालमपुरा, मंगरोप बाबा प्रध्यूमनसिंह, डॉ. युवराजसिंह झाला, गुरला बाबा चन्द्रवीरसिंह, आटून बाबा भंवरसिंह उपस्थित थे।

मोबिल ने नाइट स्ट्रीट रेस की मेजबानी की

उदयपुर (ह. सं.)। ऑटोमोटिव लुब्रिकेंट्स में लीडर मोबिल ने 31 अगस्त और 1 सितंबर को चेन्नई फॉर्मूला रेसिंग सर्किट में 'इंडियन रेसिंग फेस्टिवल 2024' के दौरान भारत की पहली नाइट स्ट्रीट रेस के लिए रेसिंग प्रमोशन प्रा. लि. के साथ साझेदारी की। यह ऐतिहासिक आयोजन मोबिल केइंडियन रेसिंग फेस्टिवल के साथ जुड़ने का तीसरा वर्ष था। यह फेस्टिवल भारत में गति, कौशल, प्रौद्योगिकी और प्रदर्शन का शानदार संयोजन है। इंडियन रेसिंग लीग और फॉर्मूला 4 चैंपियनशिप दोनों के लिए आधिकारिक लुब्रिकेंट पार्टनर के रूप में, मोबिल ने 'पर्फोमन्स बाय मोबिल 1' सूत्र पर फोकस के साथ भारतीय मोटरस्पोर्ट्स को आगे बढ़ाने के लिए अपनी प्रतिबद्धता को दर्शाया है। आरपीपीएल द्वारा आयोजित इस महोत्सव में नवंबर 2024 तक पूरे देश में पांच रोमांचक दौर होंगे। कार्यक्रम में भारत में मोबिल 1 के 50 साल के शानदार सफर का जश्न भी मनाया गया। एक्सॉनमोबिल लुब्रिकेंट्स प्रा. लि. के सीईओ विपिन राणा ने कहा कि यह एक ऐसा कार्यक्रम है जो न केवल वैश्विक मोटरस्पोर्ट्स को आगे बढ़ाने के लिए हमारे समर्पण को प्रदर्शित करता है बल्कि भारत में रेसिंग के भविष्य को भी गति देता है।

चित्रकला पर दो दिवसीय कार्यशाला

उदयपुर (ह. सं.)। राजकीय मीरां कन्या महाविद्यालय में चित्रकला विभाग द्वारा चित्रकला परिषद के अंतर्गत मीरांबाई की

525वीं जयंती पर 11-12 सिंतबर को दो दिवसीय चित्रकला कार्यशाला आयोजित की गई। पहले दिन कार्यशाला में महाविद्यालय की 30 से अधिक छात्राओं ने भाग लेकर मेवाड़ की कला और संस्कृति में मीरांबाई के विविध स्वरूप को विभिन्न रंगों के माध्यम से चित्रित किया। दूसरे दिन सभी चित्रों की प्रदर्शनी लगाई गई। प्रदर्शनी का उद्घाटन महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. दीपक महेश्वरी तथा संगीत नाट्य अकादमी के ख्यातनाम कलाकार विलास जानवे ने किया। प्रो. सुशील निंबार्क, प्रो. कहानी भानावत, पुष्पा मीणा एवं डॉ. रामसिंह भाटी ने मीरांबाई की भक्ति एवं संगीत में कला के आत्मसंबंध से छात्राओं का परिचय कराया। परिषद् प्रभारी प्रो. मनीषा चौबीसा ने धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर महाविद्यालय संकाय सदस्यों ने चित्र प्रदर्शनी का अवलोकन कर छात्राओ द्वारा बनाए गए चित्रों की सराहना की। अंत में चित्रकला परिषद द्वारा प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र प्रदान किये गए।

आरिफ़ मेरा दोस्त

आरिफ़ मेरा दोस्त, बचपन का दोस्त
गहरा दोस्त
हर हँसी हर ग़म में मेरा दोस्त,
घर भी एक जैसा और हमारे सपने भी
न वह पैसे वाला और न मैं धनी ।

आरिफ़ मेरा दोस्त
पढ़ाई में सबसे आगे
मुझसे तो बहुत आगे
रखता अपनी पीड़ा परेशानियाँ पीछे
औरों की ख़ुशियाँ ख़ुद से आगे
इंसानियत में भी सबसे आगे।

आज मेरा दोस्त मुझसे पीछे है।
मासिक भत्ते का मेरा, सरकार से हो गया इंतज़ाम
क्योंकि हर जगह मेरा नाम लिखा है,राधेश्याम।
और
आरिफ़ को अब तक मिला नहीं काम।
रुक गया आरिफ़ या रोक दिया गया
निकाला गया, या मैंआगे निकल गया ?

न कमी उसकी मेहनत में और न लगन में थी,
बस उसके नाम के आगे कोई पहचान विशेष न थी।
मेधावी आरिफ़ जोड़ न पाया
व्यवस्था के उलझे हुए धागे।
आरिफ़ रह गया पीछे और अब मैं था आगे।

आरिफ़ मेरा दोस्त
खुश है आज,मन से ख़ुश है मेरे लिये ।
परचीख़-चीख़ कर रोती आज, कहती मेरी दोस्ती
नहीं चाहिये मुझे ऐसे अवसर
मेहनत-लगन को नकारे जो आरिफ़ की।

सबको बराबरी का अवसर मिलना चाहिये
व्यवस्था में बदलाव आना ही चाहिये
और इस बदलाव में
आरिफ़ की योग्यता को पीछे
और मुझे आगे रखना है,
बाबा साहेब ने ऐसा तो नहीं कहा था।
कहा था???

- अमेरिका से पिंकी वैष्णव

लेखांकन और वित्त के समकालीन मुद्दों पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी

उदयपुर (ह. सं.)। मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के लेखा एवं व्यवसायिक सांख्यिकी विभाग के मास्टर ऑफ फाइनेंस एंड कंट्रोल प्रोग्राम और भारतीय लेखाकंन परिषद, उदयपुर शाखा के संयुक्त तत्वाधान में 'लेखांकन एवं वित्त क्षेत्र के समकालीन मुद्दे' पर एक हाइब्रिड अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन (आईसीसीआईएएफ-2024) का आयोजन किया गया। आयोजक

सचिव डॉ. शिल्पा वर्डिया ने बताया कि कार्यक्रम में मुख्य अतिथि राज्यमंत्री प्रो. मंजू बाघमार थी। प्रो.मंजू बाघमार, जनार्दनराय नागर विद्यापीठ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. एस. एस. सारंगदेवोत, सुविवि की कुलपति प्रो. सुनीता मिश्रा, मुख्य वक्ता प्रो. मार्कसी डॉकिंस, विशिष्ट अतिथि, कोटा विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. केसी सोडाणी, आईएए के पूर्व अध्यक्ष प्रो. केआर शर्मा, राउशिप, जयपुर के पूर्व उपाध्यक्ष प्रो डीएस चुंडावत एवं अधिष्ठाता प्रो. ने संगोष्ठी का शुभारंभ किया।

संगोष्ठी निदेशक एवं लेखा एवं सांख्यिकी विभागाध्यक्ष प्रो. शूरवीरसिंह भाणावत ने वर्तमान युग में लेखांकन डाटा संग्रहण व प्रबंध की समस्या, लेखा सॉफ्टवेयर के साथ अन्य तकनीकी का एकीकृत होना, डाटा का विकेंद्रीकरण, ब्लॉकचेन अकाउंटिंग, कार्बन अकाउंटिंग और डिजिटलीकरण जैसे ज्वलंत मुद्दों पर अपने विचार प्रस्तुत किये।

मुख्य वक्ता प्रो. मार्क सी. डॉकिंस ने 'शैक्षणिक लेखांकन और वित्त अनुसंधान मॉडल पर पुनर्विचार' पर वर्तमान समय की माँग के अनुरूप अनुसंधान की रूपरेखा प्रस्तुत की। लेखा विभाग के संकाय सदस्यों द्वारा तीन संपादित पुस्तकों 'लेखांकन एक भविष्यवादी दृष्टिकोण', 'लेखांकन और वित्त में समकालीन मुद्दे' तथा 'लेखांकन में उभरते मुद्दे का लोकार्पण किया गया।

प्रो. केसी सोडानी ने सरकारी कार्मिक को सार्वजनिक अवकाश का मोह त्यागने और समाज एवं देश के लिए पूरे वर्ष कार्य करने के लिए प्रेरित किया। प्रो.सुनीता मिश्रा ने बताया कि रोबोटिक, एआई, आईसीटी घातक भी है और अच्छा भी है। स्टूडेंट के अनुरूप हमे शिक्षा देनी होगी। प्रो. मंजु बाघमार ने बताया कि इस तरह की संगोष्ठियों से विद्यार्थियों को समसामयिक मुद्दों से जुड़ने के अवसर प्राप्त होते है। प्रो. बी. एल. वर्मा ने धन्यवाद ज्ञापन दिया गया।

संगोष्ठी में तीन तकनीकी सत्रों में देश एवं विदेश के प्रतिभागियों ने अपने अनुसंधान पत्रों का वाचन किया। प्रथम सत्र ब्लॉकचेन अकाउंटिंग, कार्बन, क्रिएटिव अकाउंटिंग, फेयर वैल्यू अकाउंटिंग, अकाउंटिंग में ऑटोमेशन, द्वितीय सत्र पोर्टफोलियो प्रबंधन, व्यवहार वित्त, डिजिटल मुद्रा में वित्त तथा तीसरे सत्र में एकीकृत कराधान, वैश्विक कर नीति, कर नियोजन, कर चोरी और कर चोरी तथा लेखा परीक्षा में उभरती प्रवृत्ति जैसे कराधान और लेखा परीक्षा विषयों पर ध्यान केंद्रित किया गया। सम्मेलन के लिए 235 प्रतिभागियों ने पंजीकरण कराया था, जिसमें 84 ने ऑनलाइन मोड और 147 ने ऑफलाइन मोड चुना।

उत्साह से जुड़िये,

भारत की सबसे सुंदर मैराथन में

HINDUSTAN ZINC Zinc & Silver of India द्वारा

उदयपुर वेदांता ज़िंक सिटी

हाफ़ मैराथन के लिए तैयार हो जाइए

vedanta ZINC CITY half marathon by

HINDUSTAN ZINC Zinc & Silver of India

रविवार, 29 सितम्बर 2024

Half Marathon	Cool Run	Dream Run
21 KM	10 KM	5 KM

#RunForZeroHunger

रजिस्टर करने के लिए स्कैन करें

या रजिस्टर करने के लिए वेबसाईट पर जाइये

https://vedantazchm.abcr.in

एक नेक उद्देश्य के साथ दौड़ कर विश्वविख्यात फतहसागर झील एवं शानदार अरावली पर्वतमाला का अनुभव कीजिए

Certified by: AIMS | Promoted by: ABCR anybody can run | Venue Partner: Field Club Udaipur Estd. 1931 | Medical Partner: GMCH GEETANJALI HOSPITAL | Running Partner: BROOKS LET'S RUN THERE | Supported by:

अधिक जानकारी के लिए हमें info@anybodycanrun.com पर ईमेल करें या + 91 96100 00951 पर कॉल करें

S JEE

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 904, आर्ची आर्केड, राम-लक्ष्मण वाटिका के पास, न्यू भूपालपुरा उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत।
फोन : 0294-2429291, मोबाइल-9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।